卐 श्री पार्श्वनाथाय नमः 卐

श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ का इतिहास

(पूजन, चालीसा, आरती, भजन एवं मुक्तक)

मूलनायक 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान, नक्टीकाकी

रचयिता

परम पूज्य तीर्थ जीर्णोद्धारक, क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर, पञ्चकल्याणक प्रभावक

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति – श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ का इतिहास

रचयिता – परम पूज्य तीर्थ जीर्णोद्धारक साहित्य रत्नाकर, पञ्चकल्याणक प्रभावक,
क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम 2010 प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज,
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी ● 9829076085, आस्था दी 9660996425, सपना दीदी

संयोजन – किरण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, मो.: 09414812008, फोन : 0141-2311551
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस, मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर, फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

पुनः

अक्षय पुण्यकर्त्ता

श्री कुन्दनमल श्रीमती पदमदेवी सौगाणी

पलासिया, जहाजपुर, जिला-भीलवाड़ा (राज.) ● मो.: 9414687705

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह) जयपुर ● फोन : 2363339, मो.: 9829050791

श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र (लघु सम्मेदशिखर)

चैनपुरा, माण्डलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

क्षेत्र का परिचय

मार्ग और अवस्थिति :- राजस्थान के औद्योगिक केन्द्र भीलवाड़ा से 60 कि.मी. दूरी पर स्थित अरावली पर्वत के मध्य स्थित यह क्षेत्र अपनी सु-सौम्यता, प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छटा को बिखेर रहा है, जिसका कण-कण पावन/पवित्र है; क्योंकि देवाधिदेव भगवान पार्श्वनाथ के केवलज्ञान के पश्चात् प्रथम समवशरण की रचना यही हुई थी। कंकरीले पर्वत का रास्ता चढ़ने में अतीव आनन्द की अनुभूति देता है। कारण कि इच्छा जागृत है कि देवाधिदेव पार्श्वनाथ के दर्शन करेंगे ये सब चमत्कार है त्रिलोकाधिपति वामानन्दन के।

क्षेत्र का इतिहास :- स्वर्णाक्षरों में लिखा है श्री चँवलेश्वरजी के इतिहास के अवलोकन पर मालूम होता है कि यह क्षेत्र चमत्कारों की खान है, सम्पूर्ण वर्णन लिखना अशक्य है फिर भी धृष्टतावश कुछ लिख रहे हैं। इन्हीं पहाड़ों के आस-पास प्राचीनकाल में दरीबा नामक एक नगर था जो अपनी यौवनदशा में पूर्ण उन्नत एवं सुप्रसिद्ध रहा होगा। जहाँ के खण्डहर आज भी वैभवशाली नगर को याद दिला रहे हैं। इसी नगर में शाह श्यामा सेठ रहते थे और उनके पुत्र सेठ नथमल शाह राजभद्रा, जो उस समय बड़े धर्मात्मा एवं वैभव सम्पन्न थे उनके दो पुत्र हंसराज और वच्छराज थे।

इनकी धेनु प्रतिदिन जंगल में चरने जाती थी। एक बार जब गाय के दुहने पर दूध नहीं निकला और यही क्रम लगातार कई दिनों तक चलता रहा। तब सेठजी को बड़ी चिन्ता हुई और ग्वाले से पूछा, तब ग्वाले ने निश्चय कर लिया कि आज मुझे इस गाय के पीछे दिनभर रहकर इसके दूध का पता लगाना होगा। गोधूलि में जब गायों को लाने का समय हुआ तब क्या देखता है कि वह गाय पहाड़ की चोटी (चूल) पर अपने आप चढ़ गयी।

पहाड़ की चोटी पर खड़ी हुई उस गाय का दूध वहाँ स्वत: झरने लगा तब उसे प्रसन्नता हुई जब ग्वाले का संदेह दूर हुआ। संध्या के समय सेठजी को सारा वृतान्त कह दिया। गाय का दूध क्यों झरता है, इस विचार में सेठजी व्यस्त थे; लेकिन उसका समाधान उन्हें नहीं सूझ रहा था। रात्रि के पिछले भाग में स्वप्न आया कि जहाँ गाय का दूध झरता है वहाँ भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की सुन्दर प्रतिमा विद्यमान है। अतएव उसे निकालकर वहाँ मन्दिर का निर्माण करवायें। सेठजी चिन्ता से मुक्त हुये, बड़े प्रसन्न एवं अपने को भाग्यशाली समझते हुए प्रात:काल उठे और इस निश्चय को साकार रूप देने के लिए उसी समय दृढ़ संकल्पित हुये। सेठजी ने सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा को जमीन से सावधानीपूर्वक निकलवाई फिर इसी स्थान पर मन्दिर के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया व शिखरबद्ध मन्दिर बड़ा सुन्दर व आकर्षक बनाया। प्रथम परकोटे के बाहर खुला मैदान व मध्य में मन्दिर है जिसके द्वार में पद्मासन प्रतिमा उकेरी हुई। पूजन मण्डप नौ चौकी के रूप में बना हुआ है। गर्भगृह के द्वार पर मध्य में पद्मासन उकेरी हुई प्रतिमा है और दोनों और दिगम्बर जैन खड्गासन प्रतिमाएं अंकित है।

पर्वत पर चढ़ने हेतु 257 सीढ़ियाँ पुन: आधा कि.मी. चलने पर यात्रियों के ठहरने की समुचित धर्मशाला की व्यवस्था है, वहाँ आकर दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर पुन: ऊपर की ओर गमन करते हैं जहाँ 50 सीढ़ियाँ चढ़कर भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन मनोहारी प्रतिमा के दर्शन होते हैं।

करीब एक हजार वर्ष पूर्व की प्राचीन प्रतिमा होने से उनके दर्शन से मन रूपी कमल अनायास ही विकसित हो जाता है व मन में आनन्दानुभूति होती है।

प्रतिमा बालू रेत की बनी होकर स्लेटी रंग की सर्पफण वाली अतिशय युक्त है। प्रतिमा की ऊँचाई लगभग 31 इंच की है। प्रतिमा के समीप ही स्तम्भ है, जिसमें पद्मासन व खड्गासन प्रतिमा उकेरी हुई है। मूल मन्दिर के सामने भगवान पार्श्वनाथ की उत्तंग प्रतिमा करीब 5 फीट की विराजमान है, वह भी अपने आप में अनूठी है।

चंवलेश्वर पार्श्वनाथ क्षेत्र का इतिहास 1 मार्च, 1969 में क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक में क्षेत्र की तात्कालिन आवश्यकताओं में लिखा है कि तलहटी के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार तत्काल होना आवश्यक ही नहीं; अपितु अति अनिवार्य है, किन्तु किन्हीं कारणों से वह पूर्ण नहीं हो सका।

मूर्ति की प्रतिष्ठा :– मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा बैशाख सुदी 3 वि.सं. 1272 को पंचकल्याणक महोत्सव सहित विराजमान की गई साथ में मूलनायक प्रतिमा के दाहिने भाग की ओर एक चतुर्मुख स्तंभागार श्याम पाषाण की दूसरी ओर मानस्तंभी पीले रंग की प्रतिमा भी विराजमान की गई।

क्षेत्र का आलौकिक दृश्य :– पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ क्षेत्र का दृश्य मोहक होकर चूल का कण–कण पूज्य है। जिसके पैर चुमती हुई बनास नदी अपने अविरल वेग से प्रवाहित होकर पर्वत का प्रक्षालन कर रही है ऐसी प्राकृतिक छटा से घिरे हुये क्षेत्र की अलौकिक शोभा लिखने में लेखनी भी सक्षम नहीं है। अत: आइये और अचल तीर्थ के दर्शन कर पुण्यार्जन कीजिये जो कि कर्मक्षय हेतु मुक्ति रमा को वरने में सहायक है। क्षेत्र की तलहटी में प्राचीन धर्मशाला है जहाँ पूर्व में अनेक मुनि संघों के वर्षायोग हुए हैं पास ही तपोवन का निर्माण कार्य चल रहा है।

क्षेत्र के वार्षिक मेले :– क्षेत्र पर दो वार्षिक मेलों का आयोजन किया जाता है। प्रथम मेला पौष कृष्णा 9–10 को श्री पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याणक की पूर्व संध्या पर विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों के साथ मनाया जाता है। जिसमें हजारों दर्शनार्थी हर्षोउल्लास से सम्मिलित होकर कड़ाके की सर्दी में भी अपनी धार्मिक श्रद्धा व्यक्त करते हैं। यह दृश्य मनोज्ञ एवं आकर्षक होता है।

क्षेत्र पर दूसरा मेला आसोज कृष्णा 2 को लगता है। उस अवसर पर हजारों जन आकर दिन में पूजा–पाठ, भजन–कीर्तन करते है, क्षेत्र पर पूजा–विधान का आयोजन किया जाता है। उसके पश्चात् देवाधिदेव का महाभिषेक का पुण्यार्जन कार्य सम्पन्न होता है। उसी दिन दिगम्बर समाज के सभी साधर्मी बन्धु जैन संस्कृति के महापर्व क्षमावणी का आयोजन भी करते हैं। वर्ष भर में की गई गलतियों के लिए मन–वचन–काय से सामूहिक क्षमायाचना करते है।

तलहटी का मंदिर :– क्षेत्रीय पर्वत की सीढ़ियों के सामने ऊँचे स्थान पर एक मन्दिर बना हुआ था जिसमें विशाल पद्मासन भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रातिहार्ययुक्त प्रतिमा है। इसे भी सेठ नथमलजी ने अपनी काकीजी (धर्मपत्नी सेठ हमीरमलजी) के दर्शनार्थ बनवाया था चूंकि वृद्धावस्था के कारण उनसे पहाड़ पर दर्शनार्थ जाने में विवशता थी। मूलनायक प्रतिमा जिनकी प्रतिष्ठा माघ सुदी 5मीं वि.सं. 1278 में, अतिरिक्त अन्य प्रतिमा भी थीं। ये सब खंडित हो गई थी। यह मन्दिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में होता गया और ध्वस्त हो गया था।

ब्र. गेबीलालजी ने अपनी यात्रा में इनका पूरा विवरण दिया है । लेकिन अब मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त अन्य प्रतिमायें यहाँ नहीं हैं ऐसा मालूम होता है कि वे अन्यत्र पुरातत्व विभाग में चली गई होगी। अभी भी यह प्रांगण नक्टी काकीजी का मन्दिर के नाम से पुकारा जाता है। जीणशीर्ण मूलनायक प्रतिमा अभी भी दर्शनीय बनी हुई है। द्वार के बाजू में लगभग सवा पाँच फुट क्षेत्रपाल बाबा की खड्गाशन मूर्ति है।

परम पूज्य तीर्थ जिर्णोद्धारक, क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर, पञ्चकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज वर्षायोग–2009** हेतु मालपुरा से विहार कर भीलवाड़ा जाने के पूर्व चंवलेश्वर पहुँच रहे थे। साथी मुनि विशालसागरजी एवं क्षुल्लक विदर्शसागरजी पीछे रह गये तब साथ वालों ने आग्रह किया आचार्यश्री मुनिराजजी आते हैं तब तक यहीं विश्राम कर लें सामने स्थान था लोग बोले बालाजी का स्थान है वहीं बैठते हैं। वहाँ जाकर देखा तो पास ही पार्श्वनाथ भगवान की भव्य प्राचीन मूर्ति धूप और वर्षा की भेंट चढ़ रही है लोगों ने खण्डित मानकर छोड़ दिया था एवं मन्दिर ध्वस्थ हो चुका था जिसका नाम निशान भी मिट चुका था मूर्ति की भव्यता देखकर आचार्यश्री के मन में पीड़ा हुई।

आचार्यश्री ने लोगों से मन्दिर जीर्णोद्धार की चर्चा की तो मीटिंग करेंगे यह कहकर बात समाप्त कर दी; किन्तु आँखों में मूर्ति की भव्यता बार–बार झलक रही थी कोटड़ी पहुँचने पर लोग दर्शन करने आये तब पुन: मूर्ति की चर्चा हुई, वह बोले– यदि आपका आशीर्वाद मिले तो सबकुछ हो सकता है। तब आचार्यश्री ने आशीर्वाद देकर कहा आप इस कार्य को करो हमसे जो सहयोग बनेगा अवश्य ही पूर्ण करेंगे। 5 अगस्त रक्षाबन्धन पर्व पर चर्चा हुई मन्दिर निर्माण कर चौबीसी विराजमान होना चाहिए और सभा में प्रस्ताव रखा तो उस दिन 7–8 मूर्ति स्थापनकर्ताओं के नाम प्राप्त हो गये और लोगों ने आगे बढ़कर सहयोग देने की भावना रखी अनेक विघ्न बाधाएँ आती रहीं फिर भी भगवान पार्श्वनाथ की कृपा से सब दूर होती रहीं और आज वहाँ मन्दिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है तथा जिन भगवान का जो रंग है उसी रंग में 24 तीर्थंकर की मूर्तियाँ बनकर तैयार हैं जिनका पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा दिनांक 7 मार्च, 2011 से 12 मार्च, 2011 तक परम **पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी एवं आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य** में है तथा यह मंदिर पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय के रूप में जाना जायेगा।

पास ही लोग जिन्हें बालाजी कहकर पुकारते हैं वह क्षेत्रपाल हैं। जिनको आसपास के लोगों ने कुछ सुरक्षा देकर यथा स्थान बनाए रखा।

क्षेत्र के चमत्कार :–

तीर्थ बहुत ही चमत्कारिक है और क्षेत्रपाल भी रक्षक देव के रूप में वहाँ रहे अनेक बार लोगों ने मूर्ति को ले जाने की कोशिश की किन्तु क्षेत्रपाल की सुरक्षा के आगे किसी की हिम्मत नहीं हुई और जब निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तब नागदेव स्वयं आकर मन्दिर में विराजमान हुए तब काम कर रहे कैलाशजी पारौली ने पूछा महाराज क्या करें काम रूक रहा नागदेव को देखकर लोग भाग रहे हैं। तब महाराज ने कहाह्न भगवान के सामने श्री फल भेंट कर निवेदन कर लीजिए और क्षेत्रपाल को भेंट देकर निवेदन कर लीजिए सब ठीक हो जायेगा। ऐसा करते ही नागराज वहाँ से चले गये और आज तक नहीं आये। हम तो कहते कि सच्चे मन से जो व्यक्ति पार्श्वप्रभु के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर दीपक जलाता है उसकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होती है तथा यहाँ क्षेत्र पर आने वाले भक्त अगर जंगल में रास्ता भूलने लग जाते हैं तो श्वान (कुत्ता) यहाँ उनको ऊपर क्षेत्र तक लाकर छोड़ता देखा गया है। यह प्रकाशचंदजी जैन (जयपुर) की बताई स्वयं की घटना है। अतिशय क्षेत्र पर अनेक यात्री अपनी मनोकामना पूर्ण करते है। ग्रहारिष्ट से पीड़ित जन–जीवन में शांति प्राप्त कर सकें इस हेतु नवग्रहारिष्ट निवारक नव जिनेन्द्र की मूर्तियाँ स्थापित करने का प्रस्ताव है। सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते ही रोड के किनारे अति प्राचीन छतरी हैं। उसमें चतुर्मुख (सर्वतोभद्र) श्रीजी विराजमान हैं।

क्षेत्र जीवनदान ध्रुव फण्ड योजना

परम संरक्षक	–	**101, 001.00/– रुपये**
संरक्षक	–	**51, 001.00/– रुपये**
सह संरक्षक	–	**21, 001.00/– रुपये**
सदस्य	–	**11, 001.00/– रुपये**
नव निर्माण सदस्यता	–	**25, 001.00/– रुपये**
संरक्षक सदस्यता	–	**101, 001.00/– रुपये**
संरक्षक ज्योति	–	**31,001.00/– रुपये**
पूजा फण्ड	–	**1, 001.00/– रुपये**
आजीवन पूजन संरक्षक	–	**5,101.00/– रुपये**
ज्योति फण्ड	–	**501.00/– रुपये**

आगामी योजनाएँ (तलहटी मंदिर हेतु)

1.	**मंदिर जीर्णोद्धार निर्माण हेतु**	**311001/– रुपये**
2.	**शिखर निर्माण हेतु**	**151001/– रुपये**
3.	**लघु शिखर निर्माण हेतु (24)**	**31001/– रुपये**
4.	**बरामदा के 3 खण्ड हेतु प्रति**	**100001/– रुपये**
5.	**नवग्रह निवारक 9 मूर्तियाँ हेतु**	**20001/– रुपये**
6.	**सीड़ियाँ (81)**	**3535/– रुपये**
7.	**छतरी निर्माण हेतु**	**51001/– रुपये**
8.	**मंदिर का मूल द्वार**	**71001/– रुपये**
9.	**कमरा निर्माण हेतु**	**51001/– रुपये**
10.	**दीवार में पत्थर हेतु**	**100001/– रुपये**
11.	**दीवार पर POP कार्य हेतु (4)**	**15001/– रुपये**
12.	**पार्श्व उद्यान**	**प्रतिवृक्ष 5001/– रुपये**
13.	**मंदिर निर्माण में मार्बल लगाने हेतु**	**51000/– रुपये**
14.	**उद्यान में R.C.C. कुर्सी**	**एक कुर्सी 11001/– रुपये**
15.	**डीलक्स रूम**	**100001/– रुपये**
16.	**मार्ग उद्यान हेतु**	**प्रत्येक 10 फुट के लिए 3101/– रुपये**

नोट:– 11001/– रुपये से अधिक राशि सहयोग करने वालों के नाम शिला पर अंकित किये जायेंगे।

क्षेत्र समवशरण की रचना की जा रही है जिसमें योगदान दे सकते है :–

4 मूर्ति – 51001/– रु., 4 मानस्तम्भ–31001/– रु.
समवशरण की 8 भूमि– 15001/– रु. गंधकुटी 3 खण्ड– 21001/– रु.
कल्पवृक्ष–25001/– रु. लघु उपकरण– 3101/– रु.
द्वार 4 प्रति–35001/– रु. चक्रधर 4 प्रति–11001/– रु.
मानस्तम्भ में प्रति मूर्ति–11001/– रु. मंदिर निर्माण–111001/– रु.
शिखर निर्माण–111001/– रु. मार्बल हेतु– 51001/– रुपये

एवं समवशरण निर्माण हेतु अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें।

पार्श्वनाथाष्टक

श्यामो वर्ण विराजितेति विमले श्यामोऽपि सर्पो स्मृतः।
श्यामो मेघनिघर्घरोपि च घटाश्यामं च रात्र्यखिलं।।

वर्षा मूसलधारणं च मखिलं कायोत्सर्गेणतां।
धरणेन्द्रो पद्मावती युगसुरं श्री पार्श्वनाथं नमः।।1।।

नमः श्री पार्श्वनाथाय त्रेलोक्याधिपतेर्गुरुः।
पापं च हरते नित्यं पार्श्वतीर्थस्य दर्शनम्।।2।।

ॐ ऐं क्लीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल।
पराक्रमाय ऐं ह्रीं क्लीं क्म्ल्व्र्यूं नमः।।3।।

दर्शनं हरते पापं, दर्शनं हरते दुःखं।
दर्शनं हरते रोगान्, व्याधिर्हरति दर्शनम्।।
ॐ आं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।।4।।

दर्शनाल्लभ्यते ज्ञानं, दर्शनाल्लभ्यते धनं।
दर्शनाल्लभ्यते पुत्रं, सुखी भवति दर्शनात्।।
ऐं ॐ अः नमः बार नव जाप्यं दीयते।।5।।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनं।
विद्यार्थी लभते विद्यां, सुखी भवति निश्चितं।।6।।

राज्य-मान्यं भवेन्नित्यं, प्रजानां च विशेषतः।
दुर्जनाश्च क्षयं यांति, श्रेयो भवति संकटे।।7।।

इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं त्रि-संध्यं च विशेषतः।
गृहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थस्तवेन च।।8।।

।। इति ।।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजे भजे नाय शीशं।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमो जोड़ि हाथं, नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं ग्रह्यो तू छुड़ावे, महा आगते नागते तू बचावैं।
महावीर ते युद्ध में तू जितावै, महा रोगते बन्धते तू छुड़ावैं।।

दुःखी दुःख हर्ता सुखी सुक्ख कर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द-भर्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय आवाचं।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।
महा संकटों से निकारै विद्याता, सबै सम्पदा सर्व को देहि दाता।।

महा चोर को वज्र को भय निवारै, महा पौन के पुन्त्रतै तू उबारै।
महा क्रोध की अग्नि को मेघ धारा, महालोभ शैलेश को व्रज मारा।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महा कर्म कांतार को प्रधानं।
किये नाग-नागिन अधोलोक स्वामी, हरय्यो मान तू दैत्य को हो अकामी।।

तू ही कल्पवृक्षं तूही कामधेनूं, तुही दिव्य चिन्तामणी नाग एनं।
पशु नर्क के दुःख तै तू छुड़ावै, महा स्वर्ग में मुक्ति में तू बसावै।।

करे लोह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करें सेव ताकी करे देव सेवा, सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरै ध्यान ताके सबै दोष भागे।
बिना तोहि जानै धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपातैं सरे काज मेरे।।

दोहा- गणधर इन्द्र न कर सकै, तुम विनती भगवान।
''द्यानत'' प्रीति निहार कै, कीजे आप समान ।।

।। इति।।

अभिषेक पाठ भाषा

आचार्य विशदसागरजी

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा का शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव को प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धी शाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेर के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरू, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणि में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धी वान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीं परम देवाय श्री अर्हत् परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु। ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्रह्लह्लॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकांनां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घह्लह्ल **उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
भाई बीज पुण्य का बोवे। ...

अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यंभ्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
भाई जीवन सफल बनावें। ...

अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो पुण्य की राशी। ...

पञ्च नमस्कार यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो सदा विश्वासी। ...
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
भाई गुण गाके हर्षाया। ...
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
भाई आतम ज्ञान प्रकाशी।। ...
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।
जिनेश्वर की शरण जो आवें।। ...

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह के कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरूषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए विशद होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।
परम भाव शुद्धि पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धि भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादि का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादि की, करता हूँ पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरूष हे !, हे पुरूषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया मैंने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नि में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करूँ हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।

श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतल नाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांञ्जलिं क्षिपेण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पादानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।

शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।4।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणि फल, जल तन्तु हों पुष्प महान।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।5।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धि, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धि, विडौषधि मल्लौषधि जान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आयें, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधि प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भवन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो-कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदि ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक तिहूँ काल के, नमूं सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

आत्म ज्योति कभी न जलाई गई,
शांति भी तेरे दिल में न आई सही।
रही बेचैनियाँ मम् हृदय में विशद,
क्योंकि समता हृदय में न पाई गई।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

हे पार्श्वप्रभु ! करुणा निधान, हे भव्यो के करुणाकारी।
तुम चंवलेश्वर में प्रकट हुए, शुभ सपना देकर त्रिपुरारी।।
कई भव्य जीव तव चरणों में, बहु दूर-दूर से आते हैं।
आह्वानन करते निज उर में, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! हृदय में आ जाओ, हम यही भावना भाते हैं।
हे प्रभु ! आपके चरणों की हम महिमा अनुपम गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवोषट् इत्याह्राननम्।
ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

महामोह मिथ्यात्व नाश कर, करें आत्म का उद्धार।
जन्मादि त्रय रोग रहें ना, सुपद प्राप्त होवे अविकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन परम सुगन्धित, जिसकी महिमा अपरम्पार।
भवाताप हो नाश हमारा, पा जाएँ शिवपद शुभकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षत यह पावन, अक्षयकारी मंगलकार।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु हम, अर्पित करते बारम्बार।।

चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव के पुष्प सुकोमल, परम सुगन्धित हैं मनहार।
काम रोग नश महाशील गुण, का हम पा जाएँ उपहार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हो विभाव का नाश हमारा, शुभ भावों का करें विकास।
क्षुधा रोग का नाश शीघ्र कर, सिद्ध शिला पर करें निवास।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के दीप जलाकर, निज के गुण का करें प्रकाश।
पद पाएँ अविनाशी अविचल, मोह तिमिर का करके नाश।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, खेते अग्नि के मझधार।
हमे सताया जिन कर्मों ने, होवे अब उनका संहार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के श्रेष्ठ तरू से, फल यह लाए अतिशयकार।
पाने मोक्ष महाफल हम भी, आये हैं जिन प्रभु के द्वार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञानाचरण तपोमय, आराधन खोले शिव द्वार।
पद अनर्घ अविलम्ब प्राप्त हो, हो स्वरूप मेरा शिवकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा दे रहे, चरणों में धर ध्यान।
भाव सहित हम कर रहे, जिनवर का गुणगान।।
शान्तये शांतिधारा.....

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, ले हाथों में पुष्प।
करने को अपने विशद, कर्म सभी निर्मूल।।
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

(दोहा)

थाल भरा वसुद्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
चंवलेश्वर के पार्श्व की, गाते हम जयमाल।।

(तामरस छन्द)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।1।।

श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।2।।

सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।3।।

शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।4।।

धर्म धुराधर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।5।।

जन-जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।6।।

धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।7।।

वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।8।।

पार्श्वनाथ भगवान नमस्ते, चंवलेश्वर स्थान नमस्ते।
चौबीसों भगवान नमस्ते, पार्श्व तलहटी धाम नमस्ते।।9।।

दोहा- **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।**
मुक्ति पाने के लिए, करते विशद प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

तलहटी स्थित पार्श्वनाथ जिन पूजा

स्थापना

चंवलेश्वर गिरि तीर्थराज में, रही तलहटी अपरम्पार।
पार्श्वनाथजी जहाँ विराजे, अतिशय कारी मंगलकार।।
नाटी काकी का मंदिर शुभ, चारों ओर रहा विख्यात।
जीर्णोद्धार कराया आके, विशद सिन्धु ने आ पश्चात।।
तीन लोक में पूज्य पार्श्व प्रभु, का हम करते आह्वानन।
उनके चरण कमल में करते, श्रद्धा सहित परम अर्चन।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे पार्श्व प्रभु तव ज्ञान गंग से, समकित जल पाने आए।
मिथ्या मृगतृष्णा में भटके, हम भवसागर में भरमाए।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, प्रभु नीर चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम झुलस रहे भव तापों में, हमने अतिशय कई दुःख पाए।
सम शीतलता पाने अनुपम, प्रभु चरण-शरण में हम आए।।
हम भवाताप के नाश हेतु, यह शीतल चन्दन लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्षण नश्वर पर्यायों में, हम भूल गये निज के पद को।
उपसर्ग जयी हे पार्श्व प्रभु, अब दिखला दो मुक्तिपथ को।।
अक्षय अक्षत यह श्रेष्ठ प्रभु, हम पूजा करने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है कामदेव का वाण महा, उससे बचना मुश्किल होता।
प्रभु पार्श्वनाथ के आगे वह, अपनी सारी शक्ति खोता।।
हम कामवाण के शमन हेतु, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम की महिमा हमने, अब तक प्रभु जान न पाई है।
परद्रव्यों द्वारा आत्म तत्त्व की, भूख मिटाना चाही है।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक रहे हैं सदियों से, प्रभु मोह महातम नाश करो।
अब दूर करो अज्ञान हमारा, मन मंदिर में वास करो।।
प्रभु मोह-तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ध्यान अग्नि में संयम युत, हम धूप जलाने लाए हैं।
इन्द्रिय मन को वश में करके, शुभ ध्यान लगाने आए हैं।।
अब अष्ट कर्म विध्वंस हेतु, यह धूप बनाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल से पीड़ित हो, अब मुक्ति फल पाने आये।
जिन सिद्ध सुपद पाने हेतु, हमने जिनवर के गुण गाये।।
हम मोक्ष महाफल प्राप्त करें, प्रभु भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे परमानन्द सुखामृत धारी, गुण अनन्त के अनुपम कोष।
तुम चिदानन्द चैतन्य स्वरूपी, नित्य निरंजन हो निर्दोष।।
हम निज अनर्घपद प्राप्त करें, प्रभु अर्घ्य बनाकर लाय हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ले बनास का नीर हम, देते जल की धार।
शांति धारा दे रहे, पाने शांति अपार।। *शांतये शांतिधारा...*

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
पार्श्व प्रभु के चरण में, झुका रहे हम माथ।। *पुष्पाञ्जलि क्षिपामि*

जयमाला

दोहा– चँवलेश्वर गिरि के तले, पार्श्वनाथ भगवान।
जयमाला गाके यहाँ, करते हम गुणगान।।

(पद्धडि छन्द)

शुभ जम्बूद्वीप अतिशय महान, है भरत क्षेत्र जिसमें प्रधान।
शुभ राजस्थान जिसमें प्रदेश, है जिसके मध्य मेवाड़ देश।।
है जिला भीलवाड़ा महान, शुभ पोस्ट राजगढ़ है प्रधान।
इक चैनपुरा है जहाँ ग्राम, तहँ चँवलेश्वर है तीर्थ धाम।।
शुभ तीर्थराज के पास जान, शुभ बनी तलहटी है महान।
बारह सौ अठत्तर श्रेष्ठ जान, विक्रम की संवत् रही मान।।
एक सेठ रहा नथमल प्रधान, नाटी काकी जिसकी सुजान।
गिरि पर जिससे चढ़ा न जाए, मन में दर्शन बिन खेद पाय।।
मंदिर बनवाया था महान, पारस प्रभु का अतिशय प्रधान।
नथमल श्रेष्ठी ने शुभाकार, पारस प्रभु बैठे जिस मझार।।
यहाँ पास वहे सरिता बनास, जहाँ होती सबकी पूर्ण आस।
यहाँ यात्री आते हैं अपार, करके वह आते नदी पार।।
शुभ समवशरण में पार्श्वनाथ, मुनि गणधरादि थे सभी साथ।
आया था कहते सभी लोग, शुभ दिव्य ध्वनि का मिला योग।।

यह क्षेत्र रहा अतिशय विशाल, मन्दिर के बाजू क्षेत्रपाल।
जो अतिशयकारी है महान, हो मनोकामना पूर्ण आन।।
तिथि अश्विन कृष्णा दोज मान, शुभ क्षमा पर्व होवे महान।
यहाँ पौष वदी दशमी सुजान, शुभ मेला होता है प्रधान।।
अभिषेक होय प्रभु का महान, सब श्रावक करते नृत्यगान।
जिनमंदिर मूर्ति काल पाय, हो गया ध्वस्त न कोई जाय।।
आचार्य विशद सागर ससंघ, दर्शन को आये भर उमंग।
मूर्ति को देखा इस प्रकार, मन हुआ गुरु का क्षार–क्षार।।
मन्दिर का जीर्णोद्धार होय, आगे आया न वहाँ कोय।
गुरु किए कोटडी में प्रवेश, कैलाश दोय पहुँचे विशेष।।
मन्दिर की चर्चा किए लोग, तब जीर्णोद्धार का बना योग।
निर्माण में आये कई विघ्न, वह गुरु–कृपा से हुए छिन्न।।
सन् दो हजार ग्यारह महान, दश से सोलह फरवरी जान।
करके कल्याणक फिर यथेष्ठ, चौबीसी जिन पधराए श्रेष्ठ।।
उनके चरणों करते प्रणाम, हम भी पा जाएँ मोक्ष धाम।
यह श्रेष्ठ बना मन्दिर विशाल, हैं द्वार प्रभु के रक्षपाल।।
देखे सपना जो सभी लोग, वह पूर्ण हुआ गुरु के सुयोग।
नभ में जब तक हो रवि वास, प्रभु का फैले नूतन प्रकाश।।
हम मान रहे गुरु का आभार, गुरु का दर्शन हो बार–बार।
अगहन कृष्णा एकम सुजान, पच्चिस सौ सैंतिस है निर्वाण।।
लघु धी से भक्ति किए आन, गुण ग्रहण करो ज्ञानी महान।
जब तक न पाएँ मुक्ति वास, तब तक चरणों में रहे बास।।

दोहा– पार्श्व प्रभु के दर्श का, हो सपना साकार।
विशद चरण पद वन्दना, करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चँवलेश्वर गिर के तथा, नीचे पारस नाथ।
करके प्रभु की वन्दना, चरण झुकाते नाथ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

श्री सर्वतोभद्र जिनालय पूजा

स्थापना

विशद सर्वतोभद्र जिनालय, चँवलेश्वर में अपरम्पार।
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, जिनपद वन्दन बारम्बार।।
हृदय कमल में जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।
सुरभित पुष्प समर्पित करके, करते हैं शत-शत वंदन।।
रहे हृदय में वास हमारे, विशद भावना भाते नाथ।
तव चरणों में मनोयोग से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जिनालय है मंगलकारी, श्री सर्वतोभद्र जिनालय पूजो शुभकारी।
भव की तृषा मिटाना मुश्किल, है अति दुःखकारी, निर्मल नीर गरम कर लाए, हम मिथ्याहारी।।
जिनालय है मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद वन्दन को चन्दन लाए, सुरभित शुभकारी।
भव संताप मिटाने आए, होकर अविकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव नायक शिव दायक जिन हैं, शुभ अतिशयकारी।
अक्षयपद दायक अक्षत यह, लाए अविकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम दाह भारी दुःखदायक, पाते नर-नारी।
पुष्प समर्पित करने लाए, शुभ मंगलकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना सारे जग में, है पीड़ाकारी।
ताजे शुभ नैवेद्य बनाकर, लाए मनहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम तीन लोक में, है मिथ्याकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, यह भव तमहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म शत्रु चेतन के, हैं अतिशयकारी।
धूप जलाते नाश हेतु यह, सुरभित मनहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाया तुमने, शिवपद के धारी।
फल अर्पित करते तव, चरणों अब मेरी बारी।। जिनालय है मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विध अर्घ्य समर्पित तव पद, वसु गुण के धारी।
अर्घ्य चढ़ाते यह सर्वोत्तम, पद अनर्घकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांति धारा दे रहे, भव की शांति हेत।**
पार्श्व प्रभु के पद युगल, भक्ति भाव समेत।।

शांतये शांतिधारा...

दोहा- **पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, देते हम शुभकार।**
भव की बाधा शांत कर, पाने मुक्ति द्वार।।

पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

जयमाला

दोहा- **श्री सर्वतो भद्र जिन, का करते गुणगान।**
जयमाला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

(छन्द तोटक)

जिनबिम्ब सर्वतो भद्र अहा, शुभ समवशरण प्रतिरूप रहा।
जो भव सिन्धु का सेतु कहा, फल पाया जिसने जोय चहा।।1।।
भवि तारक दोष निवारक है, विपरीत विभाव विदारक है।
निर आश्रय आश्रव बान रहा, जिनबिम्ब..... ।।2।।

भव तारण तरण जहाज सही, निज द्रव्य सुगुण पर्याय रही।
दुःख कारक द्वेष निवार कहा, जिनबिम्ब..... ।।3 ।।
समयामृत पूरित देव कहे, परकृत उपसर्ग न लेश रहे।
अविनाशी हैं जिनदेव महा, जिनबिम्ब..... ।।4 ।।
जिन चरण शरण अघ हारक हैं, जन्मादि रोग निवारक हैं।
भव तारक श्री जिनदेव लहा, जिनबिम्ब..... ।।5 ।।
भव वास त्रास अघनाशक हो, निज चेतन ज्ञान प्रकाशक हो।
फलदायक जो जन जोय चहा, जिनबिम्ब..... ।।6 ।।
श्री जिनवर अतिशय वान रहे, जो गुण अनन्त के कोष कहे।
जिनवर को केवल ज्ञान रहा, जिनबिम्ब..... ।।7 ।।
जिनदास के त्रास निवारक हैं, प्रभु वीतरागता धारक हैं।
जिन मुखतें आगम स्रोत बहा, जिनबिम्ब..... ।।8 ।।
जिनवर दर्शन के लायक हैं, शुभ सम्यक् दर्श प्रदायक हैं।
जिनने क्षायक शुभ दर्श लहा, जिनबिम्ब..... ।।9 ।।
जिन ज्ञान उपाए क्षायक हैं, अतएव भक्ति के लायक हैं।
तुम शरणागत को शरण महा, जिनबिम्ब..... ।।10 ।।
जिन 'विशद' ज्ञान प्रगटायक हैं, शुभ मुक्ति पथ के नायक हैं।
तव शिवपुर में शुभ वास रहा, जिनबिम्ब..... ।।11 ।।

(छन्द – घत्तानन्द)

श्री सर्वतो भद्र जिन, का करते गुणगान।
जयमाला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सर्वतोभद्र जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **आप स्वयं कल्याण मय, करते पर कल्याण।**
'विशद' भाव से भक्त जन, करते तव गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– **परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।**
चंवलेश्वर में पार्श्व जिन, के पद करूँ प्रणाम।।

चौपाई

जय–जय पार्श्वनाथ शिवकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामादेवी गाए।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी क्यों तुम आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते है कारे, मरने वालें हैं बैचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, कमठ नाम था जिसने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
इक दिन कमठ वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभुजी को बैठाया।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र बनाया।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।
शहर दरीवा यहाँ बखाना, सात कोष जिसका पैमाना।।
श्यामा सेठ जहाँ के वासी, राज भद्र गोत्री विश्वासी।

नथमल जिनका पुत्र बताया, पूरणमल ग्वाला कहलाया।।
गैया ने जब दूध झराया, सेठ को ग्वाले ने बतलाया।
सेठ के मन में अचरज आया, प्रात: सपना उसे दिखाया ।।
यहाँ श्रेष्ठ जिनबिम्ब समाया, उसने लोगों को बतलाया।
धीरे-धीरे खोदा भाई, उसमें अनुपम मूर्ति पाई ।।
फण से युक्त मूर्ति शुभ जानो, प्रातिहार्य युत अनुपम मानो।
चैनपुरा एक ग्राम बताया, भीलवाड़ा शुभ जिला कहाया।।
काली घाटी वहाँ बताई, अतिशय मनमोहक है भाई।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, उसका भी मेवाड़ बताया।।
मंदिर का निर्माण कराया, जिसमें प्रतिमा को तिष्ठाया।
हुआ पञ्च कल्याणक भाई, दूर-दूर से जनता आई।।
दशमी शुभ वैशाख कहाई, सम्वत् सहसेक सप्त बताई।
नदी बनास के तट पर भाई, अतिरमणीक क्षेत्र सुखदाई।।
देवों से जो पूज्य कहाए, चमत्कार कई श्रेष्ठ दिखाए।
सेठ की नाटी काकी जानो, अतिवृद्ध जिसको पहिचानो।।
जो पर्वत पर चढ़ न पाई, नीचे मंदिर हो शुभ भाई।
हम भी जिन के दर्शन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ।।
तलहटी में मंदिर बनवाया, काकी का मंदिर कहलाया।
उसमें पार्श्व प्रभु पधराए, क्षेत्रपाल द्वारे लगवाए।।
ऊँचे सवा पाँच फुट जानो, श्री जिनेन्द्र के रक्षक मानो।
आचार्य विशद सागरजी आये, चौबीसी निर्माण कराये।।
भक्त कई चरणों में आते, मन की जो फरियाद सुनाते।
बना तिबारा बीच में भाई, निर्मल जल जिसमें सुखदायी।।
उससे जल भरकर के लाते, श्री जिन का अभिषेक कराते।
समवशरण आया था जानो, पार्श्व प्रभु का कहते मानो।।
क्वार शुक्ल दोज को भाई, कलशा होते हैं सुखदायी।
आसपास के श्रावक आते, क्षमा पर्व मिल सभी मनाते।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।

योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिव सुख पाते।
पौष वदी नौमी सुखदायी, ता दिन मेला लगता भाई।।
दूर-दूर से श्रावक आते, दर्शन कर सौभाग्य जगाते।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
चंवलेश्वर के पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
''विशद'' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें।
प्रभु कर दो भव से पार- आज थारी.....

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्मे है काशीराज- आज थारी..... ।।1 ।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज- आज थारी..... ।।2 ।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी..... ।।3 ।।
नथमल को तुम स्वप्न दिखाया, पर्वत के ऊपर प्रगटाया।
चंवलेश्वर के धाम- आज थारी..... ।।4 ।।
चँवले की मूरत है प्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
हुए कई चमत्कार- आज थारी..... ।।5 ।।
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव-दु:खहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी..... ।।6 ।।
''विशद'' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी आरती..... ।।7 ।।

श्री शांतिनाथ पूजन

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांति हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।
हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतिमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।**
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ।।
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।

तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।
शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांति नाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

आर्या छन्द

शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांति मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुःख दारिद्र सब दूर हों।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु करते हैं हम आह्वाननङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणंङ्क

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ4ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँ ॐ
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ5ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्त्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँ ॐ
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ6ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँ ॐ
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ7ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँ ॐ
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ8ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ ॐ
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं ॐ9ॐ

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
पद्मा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।**
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमाल॥

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर॥
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुःख अपार॥
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय पद्मादेवी के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय॥
जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्॥
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण॥
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान॥
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतराग॥
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग॥
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है वश यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार॥
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पाय॥
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ॥

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी, आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी॥

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।**
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान॥
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्॥
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने लक्ष्य बनाया है॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं॥
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गति भटकाते हैं।।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
वह क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में प्राणी अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते है।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुःख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।**
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन।।
स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभ वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।

मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करूँ नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन।।
विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहें मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्।।
वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुआ चिन्ह मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन।।
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन।।
वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।

दोहा – चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर विशद, शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगलपरम।
मंगल करें सदैव, सुख शांति आनन्द हो।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

आरती – चंवलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान

(तर्ज– लाल दुपट्टा उड़ गया....)

धन्य हुए हैं, पार्श्व प्रभु के, दर्शन पाए हैं।–2
खुश्बू महकी है जीवन में, भाग्य जगाए हैं।–2
चलो रे सब झूमो गाओ, प्रभु की आरती गाओ ।। टेक।।

नाग युगल को, णमोकार का मंत्र सुनाया था।
'विशद' स्वर्ग में नाग युगल ने जीवन पाया था।।
प्रभु पार्श्वनाथ की जय जय जय, श्री महावीर की जय जय जय।
देव युगल प्रभु भक्ति करने, स्वर्ग से आये हैं ।। धन्य..... ।।1 ।।

तप करने वाले तपसी का, कुतप छुड़ाया था।
अज्ञानी जीवों को मुक्ति, मार्ग दिखाया था।
जय पार्श्वनाथ जी नमो नमः, जय महावीर जी नमो नमः।
तीर्थ वन्दना करके मन में, हम हर्षाए हैं।। धन्य.....।।2 ।।

नथमल सेठ को चंवलेश्वर में, स्वप्न दिखाया था।
पार्श्वनाथ को खोद जमीं से, सेठ ने पाया था।
मंदिर बनवाया हाँ भाई, प्रभु को पधराया हाँ भाई।
दूर–दूर से यात्री प्रभु के, दर्श को आए हैं ।। धन्य.....।।3 ।।

खण्ड 'ब' – भजन

(तर्ज– मधुवन के मंदिरों में....)

पारस प्रभु का जग में, बहु नाम चल रहा है।
पारस तेरे दरश से, जीवन बदल रहा है।।

1. वामा के लाल प्यारे, अश्वसेन के दुलारे।
जन्मे हैं काशी नगरी, पारस प्रभु हमारे।
काशी नगर का मानों, सौभाग्य फल रहा है ।। पारस...

2. मेरू पे इन्द्र ने शुभ, जिनका न्हवन कराया।
सुर नर खगेन्द्र ने मिल, उत्सव विशद मनाया।
लगता है मेरू पर नव, सूरज निकल रहा है।। पारस...

3. नवकार मंत्र प्रभु ने, नागों को जा सुनाया।
तुमने कुमार वय में, संयम विशाल पाया।
वश कामदेव का न, अब कोई चल रहा है।। पारस...

4. तप साधना के द्वारा, कैवल्य ज्ञान पाए।
ॐकार मयी ध्वनि से, शुभ देशना सुनाए।
सौभाग्य इस जहाँ का, जिससे सम्हल रहा है।। पारस...

5. शुभ तीर्थ चंवलेश्वर, तुमसे हुआ है पावन।
प्रगटे हैं पार्श्व प्रभुजी, तीरथ बनाये सावन।
पारस की 'विशद' ख्याति, अतिशय हुआ सुहावन।। पारस...

(तर्ज– चन्दा कब दूर गगन से...)

हैं पारस प्रभु हमारें, जन–जन के बने सहारे।
बोलें सब जय–जयकारें, इस जग के प्राणी सारे।।
जिन प्रभु के, चरण में वन्दन है, भावों से अभिनन्दन है।

1. नित पार्श्व चरण हम ध्यायें, अरू पारस हम बन जाएँ।
हम मोक्ष मार्ग पर चलकर, शिव पदवी को भी पाएँ।।
जब–जब भी दर्शन पाएँ, चरणों में शीश झुकाएँ।
तेरी पूजा करके स्वामी, अपने सौभाग्य जगाएँ।। जिन प्रभु....

2. हो दिनकर तुम हे स्वामी, जग रोशन करने वाले।
जो मोह तिमिर है जग में, उस तम को हरने वाले।।
हम मोह नशाने आए, चरणों में लगन लगाए।
तेरी महिमा सुनकर स्वामी, हम द्वार तुम्हारें आए।। जिन प्रभु....

3. हैं पार्श्व प्रभु अविकारी, इस जग में मंगलकारी।
महिमा जिनकी शुभकारी, होते हैं अतिशय भारी।।
तुम हो प्रभु अन्तर्यामी, हम बने विशद अनुगामी।
शिव मार्ग दिखा दो स्वामी, बन जाएँ शिव पथगामी।। जिन प्रभु...

(तर्ज– अगर तुम मिल आओ...)

प्रभु के गुण गाओ, प्रभु भक्ति में झूमे हम।
प्रभु की अर्चा करते ही, नाश होते हैं सारे गम।। प्रभु के....

1. प्रभु का दर्श मिलता है, जिसे वह धन्य होता है।
करे पूजा प्रभु की जो, उसे बहुपुण्य होता है।
करें हम अर्चना प्रभु की, रहे हाथों में जब तक दम ।। प्रभु के...

2. तुम्हारे हम मेरे बाबा, सभी मिल गीत गाते हैं।
चरण में भक्ति से आकर, 'विशद' माथा झुकाते हैं।
रहे श्रद्धान अन्तर में, समर्पण हो कभी न कम।। प्रभु के...

3. मिला दर्शन हमें जब से, प्रभु पारस तुम्हारा है।
मेरे सौभाग्य का तब से, श्रेष्ठ चमका सितारा है।
दरश पाकर प्रभु मेरे, खुशी से नेत्र होते नम।। प्रभु के...

(तर्ज– छोटे बाबा रे...)

पारस प्यारे जी, विराजे स्वामी चंवलेश्वर में हो–2
पधारे स्वामी चंवलेश्वर में हो–2

1. ऊँचे पर्वत की है चोटी, जा पे मंदिर बनो विशाल–2
दर्श दिखाय रहे रे– नाथ ! तेरे चरणों शीश झुकाय रहे रे।
पारस प्यारे जी.....2

2. मंदिर ऊपर ध्वजा लगी है, दूर से जो दिख जाए भाई–2
चारों ओर फहराय रही रे– नाथ ! तेरे चरणों शीश झुकाय रहे रे।
पारस प्यारे जी.....2

3. बना तलहटी में मंदिर शुभ, चौबीसी है आभावान–2
पूजा रचाय रहे रे– नाथ ! तेरे चरणों शीश झुकाय रहे रे।
पारस प्यारे जी.....2

4. छतरी में जिनराज विराजे, 'विशद' दर्श हो चारों ओर–2
शीश झुकाय रहे रे– नाथ ! तेरे चरणों शीश झुकाय रहे रे।
पारस प्यारे जी.....2

(तर्ज– तेरी दुनिया से दूर...)

पारस प्रभु हैं जग के नूर, जिनकी ख्याति दूर–दूर–सदा याद रखना।
तीरथ चंवलेश्वर मशहूर, वहाँ जाना तुम जरूर–सदा याद रखना।।

1. पर्वत ऊपर चोटी पे, मंदिर दूर से ही दिखाई दे रहा।
हरियाली छटाएँ, अरु पक्षियों का कलरव भी होता है अहा।।
दिखाई दे रहा, सुनाई दे रहा.....

2. पर्वत की तलहटी में, नाटी काकी का शुभ मंदिर भी बना ।
चारों ओर पर्वत है, ऊपर जंगल भी दिखता है घना।।
दिखाई दे रहा, सुनाई दे रहा.....

3. चौबीसी के दर्शन भी, हमको मिल जाते है जाकर के वहाँ।
क्षेत्रपाल स्वामी भी, 'विशद' द्वारे, प्रभुजी के खड़े है जहाँ।।
खड़े है जहाँ जाकर के वहाँ.....

(तर्ज– ढ़ोल बजा के...)

ढ़ोल बजा के बोल, पारस प्यारा है।
अखियाँ अपनी खोल, पारस प्यारा है।।
अरे ! पारस की जय बोल, पारस प्यारा है.....

1. कोई करे पूजा कोई करे अर्चा।
देते हैं पद ढ़ोक– पारस प्यारा है ।। ढ़ोल बजा के.....

2. कोई करे दर्शन, कोई करे वन्दन।
चढ़ा रहे फल फूल–पारस प्यारा है।। ढ़ोल बजा के.....

3. कोई करे आरती, कोई करे प्रच्छाल।
गाते हैं जयमाल– पारस प्यारा है।। ढ़ोल बजा के.....

4. कोई सुबह आवे, कोई शाम आवे।
करे कोई अभिषेक, पारस प्यारा है।। ढ़ोल बजा के.....

(तर्ज– चला–चला रे ड्राईवर गाड़ी होले–होले.....)

आओ–आओ रे चँवलेश्वर बन्धु होले–होले।
पारस के चरणों में म्हारो मन डोले।। आओ..... ।। टेक ।।

मूर्ति सुलेटी अतिशयकारी, सबके मन को भाती,
भव वन में भटके प्राणी को, भव से पार लगाती,
चलो–चलो रे–2 पर्वत के ऊपर, होले–होले। पारस के चरणों में... ।।1 ।।

जो भी बाबा शरण में आए–2 संकट सब कट जाये,
मनोभावना पूरण होवे, स्वर्ग मोक्ष पद पाये,
गाओ–गाओ जी–2 प्रभु के गुण, होले–होले। पारस के चरणों में... ।।2 ।।

बाबा तेरी कीरत भारी–2 सुन आते नर नारी,
श्रद्धा से लेकर के आते, सजी पुष्प की थाली,
तेरी भक्ति से–2 मुक्ती पाएँगे, होले–होले। पारस के चरणों में... ।।3।।
आओ–आओ रे..... ।

(तर्ज– मोरिया आच्छो बोल्यो रे.....)

हो पारस आच्छया विराज्या पर्वत ऊपरे–2।
म्हारा मनड़ा में बस्या पारसनाथ प्रभुजी ।। टेर।।

हो पारसजी मन्दिर तो दीखे थारो दूर से–2
हो जी ध्वजा लहरावे दिन रात प्रभुजी।। आच्छया.....

हो पारसजी डूंगर पर डूंगर दीखे दूर से–2
हो थांका डूंगर पर धडके वनराज प्रभुजी ।। आच्छया.....

हो पारसजी दुनियाँ में छायो भारी नाम जी–2
हो थे तो दुखयारा दुखड़ा मिटाओ प्रभुजी ।। आच्छया.....

हो पारसजी बनास नदी की बेव धारजी–2
वो तो करती थारा प्रक्षालन प्रभुजी।। आच्छया.....

हो पारस थारा चरणाँ में प्रकाशजी–2
वो वांकी नैय्या तो लगा दीज्यो पार प्रभुजी।। आच्छया.....

दोहा

ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ का पेड्या चढ्यो ना जाय।
कहना पारसनाथ को म्हारी बांह पकड़ ले जाय।।

(तर्ज– पारस प्यारा लाग्यो.....)

पारस प्यारा लाग्यो, हो चँवलेश्वर प्यारा लाग्यो,
थांकी बाकड़ली झाड्याँ में रस्तो भुल्यो।
म्हारा पारस जी मैं रस्तो कैंया पांवाला–2, पारस प्यारा लागो.... ।।1।।
अब डर लागे छे माने, हर–बार पुकारा थाने,
थांका पर्वतरा जंगल में सिंह धडूके ।
म्हारा पारस जी मैं रस्तो किया पांवाला, पारस प्यारा लागो.... ।।2।।
थे राग–द्वेष ने त्यागा, मैं आया भाग्या–भाग्या,
थांका पर्वतरा भाटा की ठोकर लागे ।
म्हारा पारस जी मैं रस्तो किया पांवाला, पारस प्यारा लागो.... ।।3।।
मैं चैनपुरा सूं चाल्या, थांका ऊँचा देख्या माल्या,
म्हाने पेड्या–पेड्या चढ़बो प्यारो लागे ।
म्हारा पारस जी मैं रस्तो किया पांवाला, पारस प्यारा लागो.... ।।4।।
थांका विशाल दर्शन पाया, मैं तन मन सूं हरसाया,
थांकी छतरी की तो शोभा प्यारी लागे ।
म्हारा पारस जी मैं रस्तो किया पांवाला, पारस प्यारा लागो.... ।।5।।
थे झूंठ बोलबो छोड़ो, और धर्म से नातो जोड़ो,
म्हारी बांकड़ली झांड्या में गेलो।
पावोरे म्हारा सेवकजी थे सीधे रास्ते आवोला, पारस प्यारा लागो... ।।6।।
थांका पर्वतरा जंगल में सिंह, धडूके म्हारा पारस जी–2
मैं रस्तो किंया पांवाला।

(तर्ज– दुनियाँ में गुरु....)

दुनियाँ में तीर्थ हजारों हैं, पर चंवलेश्वर का क्या कहना।
इसकी शोभा का क्या कहना, इसकी आभा का क्या कहना।।

1. दर्शन करने को वहाँ गये, पूजा के मेरे भाग्य जगे।
पर्वत चोटी का क्या कहना, शुभ हरियाली का क्या कहना।। दुनियाँ में...

2. जहाँ नदी की धारा प्यारी है, वहाँ बनी तलहटी न्यारी है।
वहाँ जिन मंदिर का क्या कहना, वहाँ पार्श्व प्रभु का क्या कहना।। दुनियाँ में...

3. शुभ छतरी में भगवान वहाँ, है क्षेत्रपाल स्थान जहाँ।
वहाँ चौबीसी का क्या कहना, शुभ पर्वत माला क्या कहना।। दुनियाँ में...

4. यहाँ यात्री आते हैं भारी, पूजा करते न्यारी–न्यारी।
जिनकी पूजा का क्या कहना, जिनकी अर्चा का क्या कहना।। दुनियाँ में...

5. यहाँ रचना प्यारी–प्यारी है, यहाँ खिली 'विशद' फुलवारी है।
इस क्षेत्र की महिमा क्या कहना, इस क्षेत्र की गरिमा क्या कहना।। दुनियाँ में...

(तर्ज– तुमसे लागी लगन.....)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

(1) काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया है।
अश्वसेन कुँअर, धरी वन की डगर, संयम धारे।। हम तो.....

(2) तुमने छोड़ा है धन धाम सारा, छोड़ा जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारे।। हम तो.....

(3) मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
'विशद' उपकार जिन, किए हैं स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे।। हम तो.....

(4) प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।
धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे।। हम तो.....

(5) फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, छत्र फण का बना, उपसर्ग टारे।। हम तो.....

(6) केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
गये सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे।। हम तो.....

(7) चँवलेश्वर में प्रभुजी प्रगटाए, श्रेष्ठ अतिशय कई तुमने दिखाएँ।
चरण वन्दन करें, कष्ट अपने हरें, जग के सारें।। हम तो.....

(तर्ज– मैंने चूड़ी जो.....)

तेरे दर्शन हमने पाए, अपने बिगड़े भाग्यजगाए।
मेरे मन में तुम्ही बसे हो, बाबा द्वार तुम्हारे आए।।
आ..... दर्श दिखा।

(1) दिल में तुम्ही समाए हो, नैनों में तुम छाये हो।
तुम हो मन मंदिर में– हो बाबा– आ–आ.....
तेरी आरती करने आए.....

(2) जग को रोशन करते हो, मोह महातम हरते हो।
तुम दुखियों के सहारे– हो बाबा– आ–आ.....
हम भी भक्ति करने आए.....

(3) तुम ही जग के स्वामी हो, शिव पथ के अनुगामी हो।
शिव पद को पाने वाले– हो– बाबा– आ–आ.....
जो 'विशद' गुणों को गाए.....

(तर्ज– कि हम तुम चोरी से.....)

कि पार्श्व जिन स्वामी की, मुक्ति पथगामी की।
करते रहो जय जयकार, ये अवसर आये न बार–बार।।
कि पार्श्व जिन.....
चरणों में वन्दन हो वार–वार–कि पार्श्व.....

(1) आनन्द बहुत ही आया, जब से तव दर्शन पाया।
जागे हैं भाग्य हमारे, मन भी मेरा हर्षाया।। चरणों में...
कि पार्श्व जिन....

(2) प्रभु तुम करूणा के सागर, हम भी हैं भक्त तुम्हारे।
शिव पद की आशा लेकर, आये हैं तुमरे द्वारे।। चरणों में...
कि पार्श्व जिन....

(3) उत्तम संयम को पाकर, तुमने शुभ ध्यान लगाया।
उपसर्ग कमठ ने कीन्हा, वह हार मान घबराया।। चरणों में...
कि पार्श्व जिन....

(4) हो कर्मों किना के नाशी, शुभ केवलज्ञान जगाया।
तब समवशरण देवों ने, आकर के श्रेष्ठ रचाया।। चरणों में...
कि पार्श्व जिन....

(5) ॐकार मयी जिनवाणी, सुन जीव 'विशद' हर्षाए।
तव वाणी सुनकर प्राणी, कई मोक्ष मार्ग अपनाए।। चरणों में...
कि पार्श्व जिन....

(तर्ज– वो दिल कहाँ से लाएँ.....)

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुण आपके जो गाएँ।
फिर भी चरण प्रभु जी, साहस जुटा के आए।। इस योग्य.....

1. तुम पूज्य हो हमारे, हम हैं प्रभु पुजारी।
स्वीकार करलो प्रभुजी, अब प्रार्थना हमारी।
हे नाथ ! अर्चना के, शुभ भाव ये बनाए ।। फिर भी.....

2. सारे जग मैं घूमा, पल भर न चैन पाया।
अपना जिसे बनाया, उसने ही आ सताया।
भटके हैं इस जहाँ में, हम कर्म के सताए।। फिर भी.....

3. मुख मोड़ ले ये दुनियाँ, हों द्वार बंद सारे।
उनके लिए भी हर दम, द्वारे खुले तुम्हारे।
है आश्चर्य ये भारी, अपनो ने सितम ढाऐ ।। फिर भी.....

4. चिंतामणी कहाते, हैं पार्श्वनाथ स्वामी।
हरते हो दु:ख सभी के, हे ! नाथ मोक्ष गामी।
कर दो कृपा प्रभु जी, मेरा भाग्य जगमगाए ।। फिर भी.....

5. जब से दरश किया है, नहीं और कोई भाते।
सोते 'विशद' हैं हम तो, स्वप्नों में आप आते।
मेटोगे गम हमारे, हम आस लेके आए ।। फिर भी.....

(तर्ज– क्योंकि सास भी.....)

चंवलेश्वर शुभ तीर्थ कहाया है, पारस प्रभु का धाम बताया है।
जन–मन हर्षाया है, अतिशय दिखाया है, करले प्रभु को नमन।।
क्योंकि चंवलेश्वर.....

1. गैया ने जहाँ दूध झराया है, नथमल को शुभ सपना आया है।
टीले को खोदा है, जिनबिम्ब पाया है–लोगों का है ये कथन।।
क्योंकि चंवलेश्वर.....

2. प्रभु के दर्शन को जो जाता है, मन वांछित फल को वो पाता है।
प्रभुजी हमारे हैं, पावन सहारे हैं–करले चरण में नमन।।
क्योंकि चंवलेश्वर.....

3. पूजा अर्चा जो भी करता है, कोष पुण्य से अपना भरता है।
क्यों तू अनजाना है, जिन को न माना है–हो जाए मुक्तिगमन।।
क्योंकि चंवलेश्वर.....

4. प्रभु की महिमा जो भी गाता है, अपने सारे पाप नशाता है।
महिमा निराली है, शिव देने वाली है–करले 'विशद' आचरण।।
क्योंकि चंवलेश्वर.....

(तर्ज– कुण्डलपुर आके बड़े.....)

चंवलेश्वर आके प्रभु पारस की, भक्ति करो झूम–झूम के।
झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर आके.....

1. चोटी के ऊपर मंदिर बना है, जंगल भी चारों ओर घना है।
   झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर.....
2. पार्श्व प्रभु की महिमा न्यारी, जन–जन की जो है दुखहारी।
   झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर.....
3. मंदिर तलहटी में भी सोहे, भक्तों के मन को जो मोहे।
   झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर.....
4. चौबीसी के दर्शन मिलते, मन के पाप मैल सब धुलते।
   झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर.....
5. जिनवाणी जिन गुरु को ध्यायें, 'विशद' हृदय में ध्यान लगाए।
   झूम–झूम के–2 चंवलेश्वर.....

(तर्ज– फूल तुम्हे भेजा.....)

भक्त खड़े हैं चरण आपके, विनती यह स्वीकार करो।
दर्शन दे दो हम भक्तों को, इतना सा उपकार करो।।

1. भटक चुके हैं चतुर्गति में, कही सहारा न पाया।
   पापों के दलदल में फँसकर, मन मेरा अब घबराया।
   भक्त शरण में आये हैं अब, प्रभु आप उद्धार करो ।। दर्शन दे दो.....
2. चन्द क्षणों का जीवन मेरा, दर्शन करके यह जाना।
   शास्वत नहीं है कुछ भी जग में, हमने यह भी पहिचाना।
   चेतन शक्ति सब जीवों में, अपना सा व्यवहार करो।। दर्शन दे दो...
3. पूजा करने आज पुजारी, द्वार आपके आए हैं।
   भीख प्राप्त कर जन्म अनेकों, हमने विशद गवाँए हैं।
   देकर शुभ आशीष प्रभो मम, जीवन मंगलकार करो।। दर्शन दे दो...

(तर्ज– क्योंकि सास भी.....)

पारस के जो दर्शन पाता है, अपने बिगड़े भाग्य सजाता है।
क्या तूने सोचा है, क्या तूने जाना है– करले चरण में नमन।।
क्योंकि पारस के.....

1. विषयों की हाला क्यों पीता है, राग–द्वेष में क्यो तू जीता है।
   यह सब भुलावा है, यह सब छलावा है–करले तू सद् आचरण।।
2. तन मन धन जो तूने पाया है, पुण्य उदय की यह सब माया है।
   यह न रह पाएगा, तू भी तो जाएगा– करले प्रभु का भजन।।
3. सोच जरा तू कहाँ से आया है, 'विशद' साथ में क्या तू लाया है।
   क्या तू ले जाएगा, ले जा न पाएगा– बाँधे फिर क्यों तू करम।।
4. सब निगोद से आने वाले हैं, सब पर्यायें पाने वाले हैं।
   गतियों में भटकाया, भव–भव में दुःख पाया–करले जरा चिंतवन।।
5. वीतराग जिनराज मिले तुझको, जैन धर्म का ताज मिले तुझको।
   श्रद्धा को पाया न, ज्ञान जगाया ना, तो होगा जगत में भ्रमण।।

(तर्ज– .....)

सारे जहाँ से प्यारा, जिनधर्म है हमारा–2।
जिन देव–शास्त्र–गुरु का मिल जाए सहारा–2।।

1. सूरज हो तुम जहाँ के, गुलशन के फूल हम।
   तुम हो प्रभु विधाता, चरणों की धूल हम।
   करते हैं भाव से हम, गुणगान आपका।। दिल में मेरे.....
2. सेवक हैं हम तुम्हारे, चरणों के दास हैं।
   आओ हृदय हमारे, हम भक्त खास हैं।
   करते रहें प्रभु हम, नित ध्यान आपका।। दिल में मेरे.....

3. संयम को प्राप्त करके, मुक्ति को पा गये।
संयम का मार्ग सारे, जग को दिखा गये।
शिवपुर में हो गया है, विश्राम आपका।। दिल में मेरे.....

4. कब से खड़े हैं दर पे, भगवान आपके।
जीवन किया समर्पण, है नाम आपके।
जागे 'विशद' हृदय में, श्रद्धान आपका।। दिल में मेरे.....

5. कटते हैं कर्म सारे, तव नाम जाप से।
सन्देश प्राप्त करके, मुक्ति हो पाप से।
जिन बिम्ब है मनोहर, भगवान आपका।। दिल में मेरे.....

(तर्ज– बहारों फूल बरसाओ)

जगत में हम कहा जाएँ, प्रभु का दर्श काफी है–2।
करें हम प्यार किस–किस से, प्रभु का प्यार काफी है।।

1. नहीं हम चाहते हैं सब, निराले रंग दुनियाँ के।
चले जाएँगे सत्संग में, प्रभु दरबार काफी है ।। करें हम.....

2. बिछाया जाल ममता का, मेरे सब नातेदारों ने।
प्रभु भक्ति से जागे प्रीति, यही परिवार काफी है।। करें हम.....

3. थके हैं देख विस्मय कई, लुभाये जिनसे हम भारी।
लगन हो तव चरण की अब, तेरा चमत्कार काफी है।। करें हम.....

4. जगत के साज बाजों से, हुए हैं कान ये बहरे।
'विशद' वाणी सुनें तेरी, यही झंकार काफी है।। करें हम.....

(तर्ज– लाल दुपट्टा उड़ गया....)

पार्श्वनाथ जी समा गये हैं, मेरी नजरिया में।
वेदी पर शोभित होते हैं, प्रभु मन्दरिया में।।
कि रंग वर्षा दो ना– कि फूल महका दो ना।

1. मन मोहक है मुद्रा जिनकी, सबका मन हर्षा रही।
जिनवाणी कल्याणी जग में, जीवन को महका रही।
तेरी शान निराली– जय बाबा, तेरी बात निराली–जय बाबा।
जयकारों की गूंज उठी है, मेरी नगरिया में ।। वेदी पर.....

2. चरण धूलि प्रभु पार्श्व की, चन्दन सी महकाए।
गंधोदक माथे पर लगते, भाग्य उदय हो जाए।।
तेरा दर्शन पाएँ–हे स्वामी, तेरा अर्चन पाएँ–हे स्वामी।
प्रभु पार्श्वनाथजी चंवलेश्वर की, बैठे पहाड़िया में ।। वेदी पर.....

3. तीर्थ क्षेत्र की शोभा अनुपम, हमसे कही न जाए रे।
दूर–दूर से श्रावक आकर, जिनवर के गुण गाए रे।।
श्रद्धान जगाएँ– चरणों में, सब ध्यान लगाए–चरणों में।
क्षेत्रपाल रक्षक बन ठाड़े, 'विशद' द्वरिया में।। वेदी पर.....

(तर्ज– सूरज कब दूर गगन से....)

चंवलेश्वर तीर्थ हमारा, लगता है प्यारा–प्यारा।
दिखता है अजब नजारा, पाते सब जीव सहारा।।
हे पार्श्व प्रभु, धन्य तव दर्शन है, चरणों में वन्दन है।।

1. यह तीर्थ कहा है पावन, यहाँ जो श्रद्धा से आएँ।
वह अपने इस जीवन में, मन चाही खुशियाँ पाएँ।
हैं पार्श्वनाथ दुखहारी, जो मैटें दुःख जन–जन के।
अब भाव बनाओ अपने, जिनराज चरण अर्चन के।। हे पार्श्व प्रभु.....

2. हे वीतराग अविकारी, हर दिल में तुम बस जाओ।
भक्तों की भटकी नौका, भव सागर पार लगाओ।
अब मुक्ति मार्ग दिखाओ, हम बंधे कर्म बन्धन में।
अब प्रेम सुधा बरसाओ, बश जाओ तुम तन मन में ।। हे पार्श्व प्रभु.....

3. दिनकर तुम श्रेष्ठ गगन के, हम भक्त सभी हैं तारे।
रोशन कर दो इस जग को, हम आस लगाए द्वारे।
चारित्र की पावन खुशबू, बहती तव नाथ शरण में।
हम 'विशद' अर्घ्य यह लाए, तेरे द्वय पाक चरण में।। हे पार्श्व प्रभु.....

(तर्ज– चाँदी की दीवार....)

सारे जग से प्यारा वन्दे, चंवलेश्वर शुभ नाम है।
पार्श्व प्रभु के चरण कमल में, मिलते चारों धाम है।।–2

1. पार्श्वनाथ का वन्दन करने, को बन्धु जब जायेगा।
बिगड़ा भाग्य तुम्हारा भाई, भाग्योदय हो जाएगा।
पार्श्व प्रभु के चरणों आकर, करना विशद प्रणाम है ।। सारे जग.....

2. तीर्थ वन्दना करले तुझको, भव से पार लगा देगा।
पारस बाबा तेरा इक दिन, सोया भाग्य जगा देगा।
पापी से भी पापी को यहाँ, मिल जाता विश्राम है।। सारे जग.....

3. मानव जीवन तूने पगले, जिनकी कृपा से पाया है।
यह भी पुण्य उदय है तेरा, जैन धर्म अपनाया है।
पुण्य पाप करने वाले का, आज का कल अन्जाम है।। सारे जग.....

4. पर्वत की चोटी पर प्रभु ने, अपना धाम बनाया है।
बनी तलहटी में चौबीसी, का भी दर्शन पाया है।
क्षेत्रपाल का चौबीसी के, पास 'विशद' स्थान है ।। सारे जग.....

(तर्ज– भला किसी का....)

जाने वाले पार्श्व प्रभु के, चरणों ढोक लगा देना।
भक्त आपका आश लगाए, उसको आशीष दे देना।।–2

1. पारस जिसको दर पे बुलाएँ, पुण्यवान वह होते हैं।
पूजा अर्चा करें भाव से, कर्म श्रृंखला खोते हैं।
भव सागर में भटक रहे हम, मुक्ती मार्ग दिखा देना ।। भक्त आपका...

2. दर्शन का सौभाग्य मिला तुझे, पुण्य उदय कोई आया है।
पार्श्व प्रभु के वन्दन का शुभ, तुमने अवसर पाया है।
एक बार दर्शन हम पाएँ, अवशर हमको भी देना ।। भक्त आपका...

3. हमको यह विश्वास है दिल में, शीघ्र मैं दर्शन पाऊँगा।
पूजा अर्चा तीर्थ वन्दना, का सौभाग्य जगाऊँगा।
पार्श्व प्रभु के चरण कमल में, विनती मेरी कह देना ।। भक्त आपका...

4. पार्श्व प्रभु की पावन मूरत, अपने हृदय सजाई है।
चरण वन्दना करने की अब, मेरी बारी आई है।
विघ्न कोई भी आए भगवन्, दूर शीघ्र ही कर देना ।। भक्त आपका...

5. काबिल नहीं हैं इसके हम प्रभु, तुम से कुछ भी कह पाएँ।
फिर भी भक्ति वश हे ! प्रभुजी, चरण शरण में आ जाएँ।
'विशद' भावना यही हमारी, शरण हमेशा ही देना।। भक्त आपका...

(तर्ज– हम यही कामना....)

हम यही कामना करते है–2 प्रभु पार्श्वनाथ का दर्शन हो।
हर नगर–नगर, हर गाँव–गाँव, हर गली में प्रभु का अर्चन हो।। हम यही.....

1. आराध्य हमारे हैं जिनने, सद् संयम का उपदेश दिया।
तुम जिओ और जीनो दो सबको, अनुपम यह संदेश दिया।
जो संयम को अपनाता है, उसका घर–घर में वन्दन हो ।। हर....

2. चिन्तामणि चिन्तन करने से, जीवों को वांछित फल देता।
अर्चा करने वाला प्रभु की, उस फल को क्षण में पा लेता।
है यही भावना मेरी प्रभु, चरणों में मेरा तन मन हो ।। हर...

3. श्री पार्श्व प्रभु के चरणों में, भक्ति करने जो आते हैं।
गुण गाते हैं निस्पृह होकर, वह इच्छित फल को पाते हैं।
जिन पार्श्व प्रभु के चरणों में, मेरा शत्-शत् अभिनन्दन हो ।। हर...

4. श्री पार्श्वनाथ के चरणों में, अतिशय कई देव दिखाते हैं।
रोते-रोते जो आते हैं वह, हँसते-हँसते जाते हैं।
जिन भक्ति पूजा करने से, मेरे कर्मों का खण्डन हो ।। हम...

5. तुम जिओ और जीने दो सबको, 'विशद' हमारा नारा है।
इस धरती पर जो प्राणी हैं, वह प्राणों से भी प्यारा है।
जीवों में मैत्री भाव जगे, न खेद किसी के भी मन हो ।। हम...

(तर्ज : मधुवन के मंदिरों में.....)

तारों की बात क्या है, चंदा भी झूम जाये।
पारस प्रभु के पद में, सूरज भी सर झुकाये।।

1. बहकर हवा ये आती, प्रभु का संदेश लेकर।
करती हैं वंदना वह, चरणों में ढोक देकर।
करके चरण का वंदन, आकाश मुस्कराये।। पारस प्रभु...

2. मधुवन में धीमा-2, मकरंद झर रहा है।
सौरभ सुगंध द्वारा, मन मोद कर रहा है।
फूले हुये गुलों पर, भौंरे भी गुनगुनायें।। पारस प्रभु...

3. यह तीर्थराज शाश्वत, शुभ फूल है चमन है।
नर सुर की बात क्या है, करते पशु नमन् हैं।
मस्ती में झूमते हैं, कई मेघ ओ दिशायें।। पारस प्रभु...

4. भक्तों की देखने को, मिलती हैं कई कतारें।
जो नृत्यगान करते, औ आरती उतारें।
पड़ती हैं फीकी सारी, संसार की कलायें।। पारस प्रभु...

5. पर्वत की वंदना का, सौभाग्य जगमगाये।
छूटे जहान उसका, मंजिल भी अपनी पाये।
पारस की वंदना कर, पक्षी भी गीत गायें।। पारस प्रभु...

(तर्ज : दुनियाँ में बसने वाले.....)

चरणों में तेरे मेरा गुरुदेव जी बसर है।
हमको न रंज़ो गम़ है, जब तक तेरी नजर है।।

1. कर्मों के हम सताए, भटके नहीं कहाँ हैं।
सारे जहाँ में तुमको, खोजा नहीं कहा हैं।
तेरा ठिकाना कोई, ना ग्राम है शहर हैं।। हमको न...

2. आँखों के सामने भी, तुमको न देख पाये।
कई बार दर से तेरे, खाली ही लौट आये।
नजरों के सामने ही, आया नहीं नज़र है।। हमको न...

3. मेरे जिग़र के अंदर, तू छुपके जा समाया।
सदियों से खोजने पर, तुमको न खोज पाया।
अपने से विशद क्यों तू, रहता यू बेखबर है।। हमको न...

4. जब वीर का सहारा, हमको यू मिल गया है।
सौभाग्य का सितारा, अब मेरा खिल गया है।
जिस राह पर बढ़े तुम, उस पर मेरा सफर है।। हमको न...

5. ना मौत की है परवाह, ना जिंदगी का ड़र है।
मिट्टी में जा समाना, सबका यही हसर है।
हो हाथ मेरे सर पर, चरणों में ये जिगर है।। हमको न...

(तर्ज : चिट्ठी न कोई संदेश.....)

टूटी गई है माला मोती बिखर गये।
चार दिना के बाद न जाने किधर गये।।

1. ये जीवन जल का बलबूला, उस पर फिरता फूला-फूला।
सुख में सुखी और दुःख में फूला, चर्तुगति का पड़ा है झूला।।
कर्म किया जैसा फल पाकर उधर गये।। चार दिना...

2. तेरा मेरा है यह घेरा, जोड़ रखा धन-जन का ड़ेरा।
नश्वर है जीवन ये तेरा, चार दिना का जगत बसेरा।।
नरक गति के फल को सुनकर, सिहर गये।। चार दिना...

3. जन्म समय पर खुशियाँ छाईं, बहु तक वाद्य बजे।
मित्र स्वजन मिलकर के आये, सुंदर सजे धजे।
होय प्रसन्न सभी लोगों के, हम भी हाथ गये।। चार दिना...

4. बाल अवस्था मित्रों के संग, खेल में निकल गई।
तरुण अवस्था तरुणी के संग, मेल में गुजर गई।
पावन क्षण शुभ इस जीवन के, व्यर्थ ही निकल गये।। चार दिना...

5. अर्ध मृतक सम है बूढ़ापन, हाथ-पैर कँपते।
पूजा भक्ति न बन पाती, ना माला जपते।
जो कुछ सीखा था जीवन में, वह भी बिसर गये।। चार दिना...

6. काल बली आने से कोई, रोक नहीं पाये।
'विशद' चले ना कोई माया, खाली हाथ जाये।
धन्य हुए जो जीवन पाकर, स्वयं ही सम्हल गये।। चार दिना...

(तर्ज : जहाँ नेमि के.....)

जहाँ गुरु के चरण पड़ें, वह पावन धरती है।
पल में ही गुरूवाणी, सबके दुख, हरती है।।

1. गुरु ने जो गुण पाए, हम भी वह पा जाएँ।
गुरु के गुण पाने को, गुरुवर को हम ध्याएँ।
इस जग में गुरु भक्ति, शुभ मंगल करती हैं।। पल में ही...

2. जो मोह तिमिर छाया, वह हरती गुरुवाणी।
जिन गुरुवर की पूजा, इस जग में कल्याणी।
तीर्थंकर की वाणी, गुरु मुख से झरती है।। पल में ही.....

3. गुरुवर की महिमा को, तुम नहीं समझ पाए।
बनकर के अज्ञानी, इस जग में भटकाए।
न सुनी गुरूवाणी, यह बात अखरती है।। पल में ही.....

4. गुरु मुक्ति मारग के, अनुपम अभिनेता हैं।
उत्तम जो तप करते, कर्मों के विजेता हैं।
गुरु वाणी क्यों तुमरे, न हृदय उतरती है।। पल में ही.....

5. सदियों की तुम अपनी, यह भूल सुधारो अब।
ध्याओ तुम गुरुवर को, पुण्योदय होगा तब।
सुनके गुरुवाणी 'विशद', हर भूल सुधरती है।। पल में ही.....

दस धर्म

(तर्ज - सास भी कभी बहू थी...)

प्रभु के दर्शन को जो जाता है, अपने बिगड़े भाग्य सजाता है।
प्रभुजी हमारे है पावन सहारे है, करले प्रभु का भजन।।
क्योंकि पल-पल जीवन बीता जाता है...

क्रोध नाश जिसका हो जाता है, उत्तम क्षमा हृदय में आता है।
क्षमा धर्म पाएँगे, जीवन सजाएँगे, करना है अब सद् कर्म।। क्योंकि पल–पल..

मद में क्यों तू फूला जाता है, विनय भाव न हृदय सजाता है।
दुःखों का हेतु है, दुर्गति का सेतु है। करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

लोभी मन ये कभी न भरता है, लोभी धन औरों का हरता है।
शौच धर्म पाना है, मन को समझाना है, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

मायाचारी क्यों तू करता है, आर्जव धर्म हृदय न धरता है।
छलबल ही माया है, जग को सताया है करले जरा चिन्तवन ।। क्योंकि पल–पल...

वाणी के तो बाण निराले हैं, घाव न उसके भरने वाले हैं।
जो भी सच कहता है, खुश होके रहता है, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

संयम के जो धारी होते हैं, कर्मों की वह सत्ता खोते हैं।
संवर कराता है, मुक्ति दिलाता है, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

उत्तम तप जो तपने वाले हैं, निज आत्म के वे रखवाले हैं।
द्वादश तप धारेंगें, जीवन सम्हारेंगें, करले जरा चिन्तवन ।। क्योंकि पल–पल..

उत्तम त्याग धर्म के धारी हैं, परिग्रह रहित मुनि अविकारी हैं।
मूर्छा के त्यागी हैं, संयम अनुरागी हैं, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

आकिन्चन शुभ धर्म बताया है, राग न किंचित् जिनको भाया है।
आकिन्चन धारी हैं, मुनिवर अविकारी हैं, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

ब्रह्मचर्य ही जिनका गहना हैं, ऐसे मुनियों का क्या कहना है।
मुक्ति के स्वामी हैं, जो अंतर्यामी हैं, करले जरा चिन्तवन।। क्योंकि पल–पल..

खण्ड 'स' – मुक्तक

बिन मांगे ही यहाँ पर भरपूर मिलता है,
आशाओं से अधिक जी हुजूर मिलता है।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बन्धु,
पर पार्श्व प्रभु के दर पर जरूर मिलता है।।

माथे में सबके किस्मत की लकीर होती है,
शुभाशुभ पाना अपनी–अपनी तकदीर होती है।
उनका जीवन मंगलमय हो जाता है प्यारे भाई,
पार्श्व प्रभु की जिनके हृदय में तस्वीर होती है।।

अपने हृदय में प्रभु की जागीर बना रखी है,
पार्श्व प्रभु की अनुपम तस्वीर बना रखी है।
प्रभु को माना है हमने अपना सबकुछ,
उनके चरणों में अपनी तकदीर बना रखी है।।

यह आपका ही तीर्थ है यहाँ निशंक होकर आइये।
बसन्त की बयार सा मौसम है खुल कर मुस्कराइये।।
यदि जीवन को मधुवन बनाना चाहते हो विशद,
तो पार्श्व प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाइये।।

जिन्दगी की आखिरी शाम तक चलते रहिए।
तय किए अपने मुकाम तक चलते रहिए।
पार्श्वनाथ जी जहाँ विराजमान हैं प्यारे भाई,
चंवलेश्वर पावन तीर्थ धाम तक चलते रहिए।।

एक बार पावन तीर्थ पर आकर देखिऐ,
श्रद्धा अपनी पावन जगाकर देखिऐ।
जीवन चमन न हो जाए तो कहना,
एक बार भक्ति आजमाकर देखिऐ।।

हमने किसी गैर से नहीं, अपनों से चोट खाई है।
इसलिए किसी को अपना न बनाने की कसम खाई है।।
धन छोड़ वन को जाने वाले, पार्श्वनाथ बन गये,
हम भी पार्श्व बन जाएँ, हमने यही भावना भाई है।।

सत्कर्म से इन्सान की तकदीर बनती है,
कागज पर कलम फेरने से लकीर बनती है।
जिस पत्थर को बेरहम होकर कुचला गया हरदम,
तराशने पर वही शिला महावीर बनती है।।

वैसे तो यह जिंदगी बड़ी खूबसूरत है,
पर इसे ठीक से समझने की जरूरत है।
अगर नहीं समझे तो शैतान का घर है,
और समझ गये तो भगवान की मूरत है।।

अटल तकदीर पर मेरे श्री अरिहंत लिखा है,
जुब़ां पर देख लो मेरे जय जिनेन्द्र लिखा है।
आँखों में देख लो मेरे गुरु निर्ग्रन्थ लिखा है,
हृदय को चीर कर देखो श्री भगवंत लिखा है।।

व्यर्थ की आपदा कभी पाली नहीं जाती,
समुद्र में सरिता पहुँचती नाली नहीं जाती।
प्रभु की भक्ति से कुछ न कुछ जरूर मिलता है,
सच्चे भक्त की भक्ति कभी खाली नहीं जाती।।

हर परिस्थिति में आप मुस्कराते रहना,
तीर्थ वन्दना के लिए कदम बढ़ाते रहना।
मंजिल अवश्य मिलेगी एक दिन प्यारे भाई,
परमात्मा के चरणों में शीश झुकाते रहना।।

अपनी जिन्दगी में एक काम करके देखो,
एक बार चरणों में विश्राम करके दिखो।
अवश्य ही सौभाग्य बन जाएगा आपका,
अपनी जिन्दगी पार्श्व प्रभु के नाम करके देखो।।

आपके इशारों पर ही चल रहे हैं हम,
आपके ही विशद रंग में ढल रहे हैं हम।
आपके आशीष की छाँव रहे मेरे सिर पर,
आपकी करुणा के सहारे ही पल रहे हैं हम।।

एक बार दीपक की भाँति जलके दिखा दीजिए,
एक बार चातक की भाँति पलकें बिछा दीजिए।
जिन्दगी मालामाल हो जाएगी आपकी विशद,
एक बार पार्श्व प्रभु की अर्चा में मन लगा दीजिए।।

जो परमात्मा की भक्ति गंगा में समा गये,
जिनके हृदय में उनके सिद्धान्त छा गये।
उनके भाग्य का सितारा चमक गया,
जो पार्श्व प्रभु के चरणों में भक्ति से आ गये।।

पार्श्व प्रभु की भक्ति करना ही काम है मेरा,
इस जीवन का हर पल उनके नाम है मेरा।।
अब लग गई है पार्श्व प्रभु के चरणों में लगन,
चंवलेश्वर तीर्थ ही श्रेष्ठ शिव धाम है मेरा।।

पार्श्व प्रभु के चरणों में हमेशा आते रहिऐ,
फर्ज अपना दिल से निभाते रहिऐ।
एक न एक दिन पुकार अवश्य सुनेंगें,
उनके चरणों में शीश झुकाते रहिऐ।।

पार्श्वनाथ के गीत हमेशा हम गाते रहेंगे,
उनके चरणों में अपना शीश झुकाते रहेंगे।।
पार्श्व प्रभु की भक्ति ही हमारा जीवन है,
उनके दर्शन कर हमेशा मुस्कराते रहेंगे।।

भगवान पार्श्वनाथ बड़े ही चमत्कारी हैं,
द्वार पर आने वाले बन जाते पुजारी हैं।।
हमें हमेशा आपके दर्शन मिलते रहें,
आपके चरणों में विशद ढोक हमारी है ।।

प्रभु पार्श्वनाथ मेरे नयनों में छा गये हैं।
मेरी वाणी के हर गीत में आ गये हैं।।
प्रभु पार्श्वनाथ का मंदिर मेरा है अब, अय विशद,
क्योंकि, प्रभु अब मेरे मन मन्दिर में समा गये हैं।।

प्रभु पार्श्वनाथ की जग में निराली शान है,
उनके चरणों में झुकता सारा जहान है।
यही सबसे बड़ा चमत्कार है प्यारे भाई,
क्योंकि पार्श्व प्रभु अपने आप में महान हैं।।

मेरे प्रभु ही विशद शक्ति देने वाले हैं,
मेरे प्रभु ही श्रेष्ठ युक्ति देने वाले हैं।
मेरे प्रभु की महिमा अपरम्पार है,
मेरे प्रभु ही जग से मुक्ति देने वाले हैं ।।

हे परमात्मा आज हम आपके दर्श पाने आये हैं,
मुक्त कण्ठ से आपके गीत गाने आये हैं।
मेरा मन मंदिर सूना है आपके बिना भगवन्,
अपने मन मंदिर में तुम्हें बसाने आये हैं।।

कभी नहीं पाई वह खुशी हमने पाली है,
प्रभु पार्श्व की मूर्ति हृदय में सजा ली है।
सब कुछ इनके चरणों में समाया है,
इनका दर्शन दशहरा है तो पूजा दिवाली है ।

पार्श्व प्रभु के दर पे जो आते हैं,
सर खुद ब खुद उनके झुक जाते हैं।
प्रभु का प्रभाव ही कुछ ऐसा है,
रास्ते पर चलने वाले भी रूक जाते हैं।।

आज हमारे पूर्व पुण्य का तीव्र उदय आया है,
शायद उस पुण्य ने ही यह अनुपम काम बनाया है।
पहले कभी नहीं मिला हमको यह अवसर,
आज हमने पावन तीर्थ का दर्शन पाया है।।

पार्श्व प्रभु का नाम मेरे हृदय में समाया है,
अपनी श्वासों में प्रभु को मैंने बसाया है।
सोते जागते हम प्रभु का ही नाम रटते हैं,
हमने जो पाया सब प्रभु की कृपा से पाया है।।

खिलाकर खाने का मजा ही कुछ और है,
पिलाकर पीने का मजा ही कुछ और है।
महावीर का नारा जियो और जीने दो प्रसिद्ध है,
मनुज समझ ले इसे तो मजा ही कुछ और है।।

आपको स्मरण करते ही मेरा सब काम हो गया,
तभी से आपके चरणों में मेरा विश्राम हो गया।
जो भी हुआ सब आपकी कृपा से हुआ है प्रभु,
किया तो सब आपने है मेरा भी नाम हो गया।।

प्रभु के द्वार पर जो भी अपना शीश झुकाएँगे,
भक्ति भाव से अपनी किस्मत आजमाएँगे।
उनकी झोली कभी खाली नहीं रहेगी,
जो चाहते हैं वह फल अवश्य पा जाएँगे।।

फूल अपनी खुशबू से सभी को लुभाते हैं,
सूर्य किरणों की रोशनी को चारों ओर फैलाते हैं।
यह खुशबू और रोशनी तो नष्ट प्राय है विशद,
पार्श्व प्रभु तो अलौकिक रोशनी दिलाते हैं।।

पार्श्व प्रभु के जीवन की हर बात निराली है,
अच्छे-अच्छे वीरों को भी चौकाने वाली है।
प्रभु का आशीष जिनको भी प्राप्त हो जाता प्यारे भाई,
उनके जीवन में बिना रंग बिना दीप के होती दिवाली है।।

जहाँ सरिता का प्रवाह चारों ओर हरियाली है,
जहाँ की हरेक बात करामात चौकाने वाली है।
यह तीर्थ कुछ इस प्रकार का है प्यारे भाई,
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर की महिमा ही निराली है।।

जहाँ पत्थरों पर भी कलियाँ खिल जाती हैं,
जहाँ अंधेरों में भी गलियाँ मिल जाती हैं।
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर को कौन भूल पाएगा,
जहाँ सभी की जिंदगियाँ बदल जाती हैं।।

तुम्हे परम वीतरागता से किसने सजाया होगा,
तुम्हे उपसर्ग जयी किसने बनाया होगा।
तुम परमात्मा बनकर जो आये थे इस धरा पर,
अवश्य ही सबकुछ अपनी योग्यता से पाया होगा।।

जहाँ भटकते हुए इन्सान को मुकाम मिल जाए,
जहाँ थके हुए इन्सान को विश्राम मिल जाए।
चरणों में समर्पण करने वाला क्या नहीं पा लेता,
पार्श्व प्रभु के चरणों में तो शिव धाम मिल जाए।।

जो कल था उसे भूलाकर तो देखो,
जो आज है उसे पाकर तो देखो।
आने वाला पल खुद ही सँवर जाएगा,
एक बार प्रभु के पास आकर तो देखो।।

परमात्मा के चरणों में ये फरियाद करते हैं,
उन्हें सलामत रखना जिन्हें हम याद करते हैं।
अपना यह जीवन समर्पित कर दिया आपके चरणों,
विशद हृदय से हम यह सिंहनाद करते हैं।।

एक तो हमे गुरुवर आपके दर्श नहीं होते,
दर्श हो भी जाएँ तो चरण स्पर्श नहीं होते।
चरण स्पर्श कभी-कभी हो जाते हैं,
किन्तु चाहते हुए पर नये वर्ष नहीं होते।।

जरा सा भी प्रमाद आते ही दोष हुआ करता है,
व्यक्ति शायद उस समय मदहोश हुआ करता है।
जब भी अहसास होता अपनी गलती का,
उस समय इन्सान को अफसोस हुआ करता है।।

बन्द थे द्वार कमरे के हम नहीं खुला सके,
जाते समय गुरुवर को हम नहीं बुला सके।
देखते ही देखते बहुत दूर निकल गये गुरुवर,
उन्होंने तो याद नहीं किया पर हम उन्हें नही भुला सके।।

हमारी आवाज दूर से भी सुनाती तो होगी,
तुम्हारी ध्वनि साथ में गुनगुनाती तो होगी।
हँसे बगैर नहीं रह पाते होंगे आप स्वप्न में भी,
आपको हमारी याद आने पर हँसी आती तो होगी।।

यह जिन्दगी एक काँटों का सफर है,
न तेरी यहाँ कोई दुकां है न ही तेरा घर है।
क्यों खोज रहे हो ठिकाना यहाँ रहने का,
ये जिन्दगी तो विशद अन्जाना शहर है।।

हमे न फूलों की न बहारों की तलाश है,
न मन में उजले चाँद सितारों की आस है।
हर जन्म में आपको ही पाएँगे गुरुवर,
हमें तो अपनी भक्ति पर पूरा विश्वास है।।

जिन्दगी की राहों में हर जगह नये चेहरे मिलेंगे,
कहीं पर कम तो कहीं पर अधिक भी मिलेंगे।
हर समय सोच समझ कर कार्य करना बन्धु,
जरुरी नहीं कि हर जगह हम जैसे मिलेंगे।।

कभी जिन्दगी में किसी के लिए नहीं रोना,
रोकर अपने आंसुओं से व्यर्थ चेहरा नहीं धोना।
यह जिन्दगी प्राप्त की है कुछ कर गुजरने को,
रोकर इन पलों को व्यर्थ नहीं खोना।।

बिखरे आँसुओं के मोती हम जोड़ न सकेंगे।
आपकी भक्ति से कभी मुख मोड़ न सकेंगे।
छूट जाए सारी दुनियाँ सारा संसार हमसे,
पर गुरुदेव आपके चरण कभी छोड़ न सकेंगे।।

वह पल भी क्या पल रहा होगा,
जब पूर्व से सूरज निकल रहा होगा।
उस समय की छटा भी निराली होगी विशद।
जब दीक्षा दिवस का कार्यक्रम चल रहा होगा।।

जो सब तीर्थ और चारों धाम के भी दर्शन कर आया,
जिसने सभी तीर्थों पर भी पूजा और विधान रचाया।
फिर भी उसकी तीर्थ यात्रा अधूरी है पार्श्व प्रभु के दर्शन बिन,
जो पावन अतिशय तीर्थ चंवलेश्वर पर नहीं पहुँच पाया।।

शरण को प्राप्त करके जो भाव से गीत गाता है,
विशद श्रद्धान हो दिल में वही जिन दर्श पाता है।
विराजे पार्श्व जिनवर हैं परम तीरथ निराला है,
कहा जाए वही श्रावक प्रभु पद सिर झुकाता है।।

झुकाए शीश चरणों में हृदय से भक्ति को पाकर,
करे पूजा विशद अर्चा चरण में द्रव्य को लाकर।
उसे फल प्राप्त होता है भक्ति जो भाव से करता,
झुकाते शीश चरणों में स्वर्ग से देव भी आकर।।

नही सोचा किसी ने जो भक्ति से काम हो जाए,
जगे सौभाग्य मानव का जगत् में नाम हो जाए।
प्रभु पारस बसे दिल में हमारे भी विशद आकर,
प्रभु के पाक चरणों सतत् प्रणाम हो जाए।।

प्रभु पारस यहाँ आये सभी के कष्ट हरते हैं,
करे अर्चा प्रभु की जो विशद सिन्धु से तरते हैं।
बताया मोक्ष का मारग प्रभु पारस ने हम सबको,
तभी से हम सभी उनकी सदा जयकार करते हैं।।

प्रभु पारस रहे अनपुम सदा हम गीत गाएँगे,
प्रभु का दर्श करने को यहाँ हम नित्य आयेंगे।
प्रभु कर दिखाया वह नहीं जो कोई कर सकता,
शरण को प्राप्त करके हम चरण माथा झुकाएँगे।।

करे न दर्श पारस का अभागा वह कहा जाए,
कहीं जाए कहीं भटके कहीं न चैन वह पाए।
घूमकर आएगा इक दिन करे महसूस सच को जब,
सही इन्सान वह जानो प्रभु के दर्श को आए।।

***

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं ।8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज।।
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम।।

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन–जन को तुम लगते प्यारे।।
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है।।
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है।।
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना।।
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन–जन को दे शीतल छाया।।
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर–घर दीप जले सुखदाई।।
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा।।
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर।।
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए।।
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया।।
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो।।

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर।।
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन–जन के तुम हो हितकारी।।
परपीड़ा को सह न पाते, जन–जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर–नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।।
भक्त जनों को गले लगाते, हिल–मिलकर रहना सिखलाते।
कइ विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले।।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ति भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी।।
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ति से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें।।
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ–जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं।।
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन–अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं।।
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते।।
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय–जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे।।
भक्ति से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें।।

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान।।
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख–शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष।।

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र (लघु सम्मेदशिखर)

चैनपुरा, माण्डलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

क्षेत्र परिचय

मार्ग और अवस्थित- भारतीय वसुन्धरा में हमारे प्राचीन ऋषि, मुनि एवं भगवन्तों की तपःस्थली, पंचकल्याणक स्थली का उल्लेख पढ़ने, सुनने व देखने को मिलता है एवं हम सबके अनुभव में आता है। जब कभी हम इन तीर्थ क्षेत्रों पर जाते हैं तब वहाँ की पवित्रतम वर्गणाएँ, वहाँ का वायुमण्डल तथा आकाश हमारे मन-मस्तिष्क और आत्म परिणामों में निर्मलता, पवित्रता तथा पावनता से भरा आह्लादमय आंतरिक वातावरण बना देती है।

आध्यात्मिकता के कारण ही हमारी भारतीय संस्कृति की अभिन्न धारा श्रमण संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति से श्रेष्ठ कहलाती है और वह आध्यात्मिकता इन तीर्थ क्षेत्रों में भरी पड़ी है। सवाल यह है कि हम अपने इन अक्षुण्य भण्डारों से कितना लाभ ले पाते हैं।

जैनाचार्यों ने मंगल के भेद करते हुए क्षेत्र मंगल को भी वर्णित किया है जहाँ-जहाँ तीर्थंकर भगवन्तों का गमन होता है उनके प्रभाव से वहाँ की धरा भी मंगलमय हो जाती है और तीर्थ क्षेत्र से अलंकृत हो जाती है।

अतिशय क्षेत्र भारतवर्ष में बहुत हैं जिसमें अनेकों का तो हमने अभी तक नाम भी नहीं सुना, पर ये क्षेत्र अपने आप में बहुत गरिमापूर्ण है। तो आइये, हम आपको उस ओर ले चलते हैं जहाँ अनेकों नर-नारी अपने नश्वर जीवन को सफल बनाते हैं, वैसे तो भारत की पावन वसुन्धरा पर तीर्थंकरों में प्रसिद्ध उपसर्ग विजेता देवाधिदेव 1008 श्री भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से होते हैं। इन्हीं क्षेत्रों की शृंखला में अपना अद्भुत स्थान अतिशय क्षेत्र श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र का है। यह क्षेत्र मेवाड़, खैराड़ प्रांत का गौरव, परम तीर्थराज सम्मेद शिखर पर अवस्थित भगवान पार्श्वनाथ की गगनचुम्बी टोंक की अपेक्षा से पश्चिमी भारत का लघु सम्मेदशिखर कहलाता है।

इतिहास- बिजौलियां तीर्थ क्षेत्र पर उपलब्ध शिलालेखों की प्रमाणिकता विश्व प्रसिद्ध है। उसके अनुसार देवाधिदेव 1008 भगवान पार्श्वनाथ के केवलज्ञान व प्रथम समवशरण की रचना बिजौलिया क्षेत्र पर हुई तदनन्तर देवाधिदेव विहार

कर चंवलेश्वर की उत्तंग पहाड़ी पर पधारे जहाँ कुबेर ने सौधर्म इन्द्र के आदेशानुसार द्वितीय बार समवशरण की रचना की। अतः यह तीर्थ क्षेत्र साक्षात् भगवान पार्श्वनाथ के चरण-कमल एवं समवशरण से पवित्र हुआ। तभी से यह क्षेत्र जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र बना है।

अरावली पर्वतमाला की उत्तुंग पहाड़ी पर देवाधिदेव 1008 भगवान पार्श्वनाथ के प्रकट होने की बड़ी आश्चर्यजनक सुन्दर घटना है। राजस्थान के भू-भाग पर मेवाड़ प्रांत में अरावली पर्वतमाला के इन्हीं पहाड़ों (जिन्हें काली घाटी के नाम से जाना जाता है) के आस-पास दरीबा नाम का एक शहर था जहाँ के खण्डहर आज भी किसी नगर के गत वैभव की याद दिलाते हैं। इसी नगर में दिगम्बर जैन श्रेष्ठी श्री श्यामा शाह नाम के एक सेठ रहते थे। उनके एक पुत्र था नथमल शाह जो बड़े ही धर्मपरायण व वैभवशाली थे। दिगम्बर जैन श्रेष्ठी श्री नथमल शाह की एक धेनु (गाय) प्रतिदिन इन जंगलों में चरने को जाया करती थी। सायंकाल वापस लौटने पर जब गाय दूध नहीं देती थी तो सेठ नथमल शाह को बड़ी चिंता हुई। इस बारे में ग्वाले से पूछा तो ग्वाले ने अनभिज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि सेठजी मैं आज इस गाय पर पूरी नजर रखूँगा, सायंकाल वापस आने पर ही मैं आपको कुछ बता पाऊँगा। ग्वाला गायें चराने के लिए गया। उक्त धेनु पर पूरी निगाह रखी जब सायंकाल गोधूलि बेला में गायों को वापस शहर लाने का समय हुआ तो ग्वाला देखता है कि वह गाय सबसे ऊँचे पहाड़ के उत्तुंग शिखर पर चढ़कर खड़ी दूध झरा रही है। उसका दूध अपने आप झर रहा है। यह देख ग्वाला बड़े आश्चर्य में पड़ गया। सेठजी के प्रश्न का यथोचित उत्तर पाकर ग्वाले को बड़ी प्रसन्नता हुई और सोचने लगा यह कोई साधारण बात नहीं है, यहाँ कोई चमत्कार है। सायंकाल जब गायों को वापस शाह नथमलजी के यहाँ ले गया तो उसने अपनी आँखों देखा सारा हाल सेठजी को सुना दिया। धर्मपरायण दिगम्बर जैन श्रेष्ठी की चिन्ता दूर हुई, साथ ही मन में विचार उठने लगा कि यह गाय वहाँ जाकर स्वतः अपना दूध क्यों झराती है। काफी सोच-विचार के बाद श्रेष्ठी को इसका समाधान नजर आया, वे बड़े चिंतित थे। रात्रि के पिछले पहर में सेठजी को बड़ा सुन्दर स्वप्न आया कि जहाँ गाय दूध झराती है, वहाँ भगवान की बहुत ही मनोज्ञ एवं अद्वितीय प्रतिमा विद्यमान है। आप उसे सावधानी पूर्वक वहाँ से निकाल कर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाएं। प्रातःकाल उठकर श्री जिनेन्द्र देव का स्मरण करते हुए सेठ नथमलजी पहाड़ी के उस उत्तुंग शिखर पर पहुँचे जहाँ पर गाय दूध झराती थी। सेठ नथमलजी ने स्थान की सावधानी पूर्वक खुदाई करवाकर सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा बाहर निकलवाई व इसी स्थान पर मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया। सेठजी को स्वप्न में यह भी आदेश मिला कि धन की तनिक भी चिन्ता न

करें– सेठजी ने वहाँ एक भव्य शिखरबंद मंदिर का निर्माण कराया व देवाधिदेव की पार्श्वनाथ की प्रतिमा को वहाँ विराजमान किया। यह वृत्तांत आज का नहीं, ग्यारहवीं शताब्दी का है।

क्षेत्र का वैभव एवं प्राचीनता– इस घाटी के आस–पास के पहाड़ों में अनेक खनिज संपदा के भण्डार हैं। घिया पत्थर (सोफ्ट स्टोन) की एशिया की सबसे बड़ी खदान व चायना क्ले (खड़िया) की खदान भी इन्हीं पर्वत श्रृंखलाओं में विद्यमान है तथा एक भिणाय की बावड़ी नामक स्थान है जो विश्व पुरातत्व में अपना विशेष स्थान रखती है। इस क्षेत्र का इतना वैभव सम्पन्न होना भगवान पार्श्वनाथ का पावन प्रसाद है। तलहटी से प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिए क्रमशः 350 सीढ़ियाँ चढ़कर लगभग एक किलोमीटर पैदल चढ़ाई करनी पड़ती हैं, (आजकल वाहन पहाड़ी पर पहुँचते हैं) बीच में एक जलाशय आता है जिसे तारा बावड़ी के नाम से जाना जाता है। विशाल धर्मशाला, दालान, फिर प्रथम परकोटा, उस परकोटे से कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर खुला चौक फिर कुछ सीढ़ियाँ और चढ़ने पर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन होते हैं। इन तीन परकोटों के दूसरे परकोटे में भगवान के मंदिर की पूर्ण परिक्रमा है। मूल मंदिर के द्वार पर एक पद्मासन व दो खड्गासन दिगम्बर जैन प्रतिमा उकेरी हुई है। पूजन मण्डप नौ चौकियों के रूप में बड़ा आकर्षक बना है। मंदिर का निर्माण बड़ा भव्य व आकर्षक है। यह स्थान लगभग 20 फीट लम्बा व 16 फीट चौड़ा है। ऐसे विशाल पहाड़ के उत्तुंग व दुर्गम स्थान पर वैशाख बुद 3 सोमवार, वि.सं. 1272 में विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ देवाधिदेव की मूल प्रतिमा मूल वेदी में विराजमान की गई। साथ ही मूलनायक प्रतिमा के दाहिने भाग में एक श्याम पाषाण की चौबीसों भगवान की सुन्दर व आकर्षक एवं बाईं ओर मानस्तम्भ के ऊपर का मंदिर भाग विराजमान है।

तलहटी का मंदिर– पहाड़ की तलहटी में सेठ नथमलजी ने एक प्राचीन मंदिरजी का निर्माण अपनी काकी (धर्मपत्नी सेठ हमीरमलजी) के दर्शनार्थ बनवाया था जिसे नाटी काकी के मंदिर के नाम से जाना जाता है। जिसकी प्रतिष्ठा माघ सुद 5 विक्रम सं. 1279 में सम्पन्न हुई। यह मंदिर धीरे–धीरे जीर्ण–शीर्ण होता गया और पूरी तरह ध्वस्त हो गया तथा मूलनायक पार्श्वनाथ के अलावा और जो प्रतिमाएँ थी वह भी यहाँ से चोरी चली गई। इस मंदिर के द्वार के बाजू में लगभग सवा पांच फुट के क्षेत्रपाल बाबा की खड्गासन मूर्ति है। जो राजस्थान के जैन–जैनेत्तरों के बीच चमत्कारिक ऋद्धि–सिद्धि प्रदाता के रूप में प्रसिद्ध है।

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज ससंघ ने वर्षायोग–2009 हेतु मालपुरा से विहार कर भीलवाड़ा जा रहे थे इसके पूर्व चंवलेश्वर तीर्थ की वन्दना हेतु चंवलेश्वरजी तलहटी तक पहुँचे। साथी मुनि 108 श्री विशालसागरजी व क्षुल्लक 105 श्री विदर्शसागरजी पीछे रह गये तो साथ वालों ने आग्रह किया कि आचार्यश्री जब तक मुनिराजजी आते हैं तब तक यहीं विश्राम कर लें, सामने स्थान था लोग बोले क्षेत्रपालजी का स्थान है वहीं बैठते हैं। वहाँ जाकर देखा तो पास ही पार्श्वनाथ भगवान की भव्य मूर्ति धूप और वर्षा की भेंट चढ़ रही है। लोगों ने खण्डित मानकर छोड़ दिया था एवं मंदिर ध्वस्त हो चुका था जिसका नाम निशान भी मिट चुका था। मूर्ति की भव्यता देखकर मन में पीड़ा हुई। मानों उस वक्त आचार्यश्री को अभाषित हुआ कि वह मुझसे कह रही है– यहाँ का जीर्णोद्धार कराओ।

लोगों से मंदिर जीर्णोद्धार की चर्चा की तो मीटिंग करेंगे यह कहकर बात समाप्त कर दी; किन्तु आँखों में मूर्ति की भव्यता बार–बार झलक रही थी। कोटड़ी पहुँचने पर कमेटी के लोगों से पुनः मूर्ति की चर्चा तब वह बोले– यदि आपका आशीर्वाद मिले तो सब कुछ ठीक हो सकता है। तब आचार्यश्री ने आशीर्वाद देकर कहा आप इस कार्य को करो हमसे जो सहयोग बनेगा अवश्य ही करेंगे। 5 अगस्त रक्षाबंधन पर्व पर क्षेत्र मंदिर निर्माण कर चौबसी विराजमान होना चाहिए यह सभा में प्रस्ताव रखा तो लोगों ने अधिक से अधिक सहयोग देने की भावना रखी। फिर मंदिर जीर्णोद्धार कार्य समाज के सहयोग से शुरू किया। मंदिर जीर्णोद्धार कार्य में अनेक विघ्न बाधाएँ आती रही। फिर भी भगवान पार्श्वनाथ की कृपा से सब दूर होती रही और आज यहाँ मंदिर का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर है तथा जिन भगवान का जो रंग है उसी रंग में 24 तीर्थंकर की मूर्तियाँ बनकर तैयार है जिनका पंचकल्याणक दिनांक 10 से 16 फरवरी तक है, अब यह मंदिर होकर पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय के रूप में जाना जायेगा। पास ही लोग जिन्हें बालाजी कहकर पुकारते हैं वह क्षेत्रपाल हैं। जिनको आस–पास के लोगों ने कुछ सुरक्षा देकर यथास्थान बनाए रखा। सीढ़ियों के ऊपर छतरी में सर्वतोभद्र जिनालय विद्यमान है जो भारत के सभी तीर्थों में अद्वितीय है।

तीर्थ बहुत ही चमत्कारिक है और क्षेत्रपाल भी रक्षक देव के रूप में यहाँ विराजमान है। अनेक बार लोगों ने मूर्ति को ले जाने की कोशिश की; किन्तु क्षेत्रपाल की सुरक्षा के आगे किसी की हिम्मत नहीं हुई और जब निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तब नागदेव वहाँ इधर–उधर घूमने लगे। निर्माण कार्य में लगे लोग देखकर डर गये। लोगों ने आचार्यश्री के पास जाकर कहा कि नागदेव को देखकर कार्य करने वाले लोग भाग रहे हैं। हमें क्या करना चाहिए ? तब महाराज ने कहा– भगवान के सामने श्रीफल भेंट कर निवेदन कीजिए और क्षेत्रपाल को भेंट देकर निवेदन कर लीजिए सब ठीक हो जायेगा। ऐसा करते ही नागराज वहाँ से चले गये और आज तक नहीं आये। हम तो कहते हैं कि सच्चे मन से जो व्यक्ति पार्श्वप्रभु

के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर दीपक जलाता है उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है।

जैन–अजैन सभी वर्ग के लोग यहाँ के चमत्कार को मानते हैं व यहाँ के दर्शन कर अपनी आपदाओं, विपदाओं से निजात पाने के लिये प्रभु के दर्शन कर सुखी होते हैं। इसी क्रम में सन् 1990 में एक चमत्कार श्री बाबूलालजी जैन आंवा वालों के जुबानी– '' जून महीना दोपहर की तपती धूप व गर्मी, शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद 150 सीढ़ियाँ कुछ ही क्षणों में लगभग एक दर्जन साथियों के साथ निर्बाध चढ़ना, दर्शन पूजन के बाद हमारे संघ की एक महिला श्रीमती कमला देवी अत्यधिक प्यास से व्याकुल हुई। ऊपर मंदिर में पीने के पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी। मैंने नीचे धर्मशाला की ओर आवाज लगाई। इतने में बीहड़ जंगलों की ओर से एक आवाज आती है, ठहरों पानी आ रहा है और एक लाल पगड़ी वाला आदमी तुरन्त ठण्डा अमृतवत् पानी लाकर पिलाता है। मैं उसे धन्यवाद देने को दो शब्द बोलता उससे पहले ही वह व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।'' यह ताजा अतिशयकारी घटना है तथा जयपुर से श्रेष्ठी आये तो रास्ता भूलकर वापिस जाने को हुए उसी समय एक कुत्ता आगे चलने लगा वह क्षेत्र पर आते ही पता नहीं कहाँ गया।

क्षेत्र पर आयोजित मेले– वैसे तो क्षेत्र पर समय–समय पर त्यागी व्रतियों के सान्निध्य में कई आयोजन होते आये हैं, किन्तु वर्ष में दो बार मेले के आयोजन भी होते हैं जो बड़े विशाल पैमाने पर होते हैं–

1. भगवान पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक दिवस की पूर्व संध्या पर पौष कृष्णा नवमी की रात्रि व दशमी के प्रभात तक विशाल मेले का आयोजन प्रतिवर्ष होता है जिसमें सम्पूर्ण भारतवर्ष के सुदूर प्रांतों से हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। नवमीं की रात्रि में शास्त्र स्वाध्याय, विशाल सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ रात्रि जागरण का आयोजन व दशमी के दिन प्रातः अभिषेक पूजनादि कार्य होता है। यात्रियों की सुविधा हेतु कमेटी द्वारा सभी व्यवस्थाएँ की जाती है।

2. आसोज कृष्णा 2 भाद्रपद पर्युषण पर्व की समाप्ति के पश्चात् यह एक दिवसीय आयोजन भी अपना विशेष स्थान रखता है इस दिन मण्डल विधान व भगवान पार्श्वनाथ के अभिषेक व शांतिधारा में हजारों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं व सामूहिक क्षमापना का पर्व भी मनाया जाता है।

उपसंहार : निवेदन– श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनास नदी के पावन तट पर अरावली पर्वत माला की सबसे ऊँची चोटी जो समुद्र लेवल से 350 मीटर ऊँचाई पर है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ का भव्य मंदिर स्थित है एवं यहाँ का प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त शुद्ध, पर्यावरण युक्त, अति मनोरम् एवं सुरम्य होने से प्रत्येक धर्मप्रेमी को अपनी ओर आकर्षित करता है। यही कारण है कि हर समय यहाँ यात्रियों का तांता लगा रहता है। श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र राजस्थान के प्राचीन अतिशय क्षेत्रों में से एक है जहाँ की गाथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में बड़ी मधुर लय से उत्साह के साथ गाई जाती है–

पारस प्यारा लागो, चंवलेश्वर प्यारा लागो।
थांकी बाकड़ली झाड्या में रस्तो भूल्यो, म्हारा पारसजी। मैं रस्तो कइयां पावांला।

सुविधाएँ– क्षेत्र पर आने वाले यात्रियों के लिये पहाड़ी पर पहुँचने तक सीमेंट रोड़ बना हुआ है तथा ठहरने के लिये लगभग 40 कमरे बने हुए हैं। रात्रि विश्राम करने वाले यात्रियों के लिए स्वच्छ बिस्तरों, रजाइयों की व्यवस्था है। भोजन बनाने वाले रसोइयों की व्यवस्था है जो आदेश देने पर भोजन बना देता है। ठंडे पानी के लिये वाटर कूलर लगा हुआ है। स्वयं के भोजन बनाने के लिये बर्तन एवं कच्ची सामग्री हर समय उपलब्ध मिलती है। पूजन विधान आदि करने वालों को पूजन सामग्री मण्डल तथा आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान, शान्तिनाथ विधन एवं अन्य रचित पुस्तक भी यहाँ उपलब्ध हैं।

यात्रा मार्ग– (1) चंवलेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थक्षेत्र नीमच बड़ोदरा व नीमच आगरा फोर्ट (बड़ी लाईन पर) माण्डलगढ़ रेल्वे स्टेशन से 35 किमी. तथा देवली से 50 कि.मी.राजस्थान के भीलवाड़ा से वाया कोटड़ी होते हुए 55 किमी. दूरी पर है।

(2) अतिशय तीर्थ क्षेत्र बिजौलियां से 60 किमी., केशवरायपाटन से 135 किमी., तथा कोटा से वाया बिजौलियां 150 किमी., जयपुर चूलगिरि देवली, जहाजपुर खजुरी होते हुए 230 किमी. दूरी पर स्थित है। एक बार अवश्य पधारकर धर्मलाभ लेवें।

आगामी योजनाएँ

1.	**मूर्ति जीर्णोद्धार मूलनायक पार्श्वनाथजी हेतु**	**51001/– रु.**
2.	**मंदिर जीर्णोद्धार हेतु**	**311001/– रु.**
3.	**लघु शिखर निर्माण हेतु (24)**	**51001/– रु.**
4.	**बरामदा के 3 खण्ड हेतु प्रति**	**100001/– रु.**
5.	**खड्गासन 3 मूर्तियाँ हेतु**	**200001/– रु.**

6.	सीढ़ियाँ (81)	3535/- रु.
7.	छतरी निर्माण हेतु	51001/- रु.
8.	मंदिर का मूल द्वार हेतु	71001/- रु.
9.	कमरा निर्माण हेतु	51001/- रु.
10.	सीढ़ियों के रेलिंग कार्य हेतु	21001/- रु.
11.	दीवार में पत्थर हेतु	100001/- रु.
12.	दीवार पर पीओपी कार्य हेतु (4)	15001/- रु.

क्षेत्र पर ध्रुव फण्ड योजना

1.	परम संरक्षक	1,01,001/- रु.
2.	संरक्षक	51,001/- रु.
3.	सह संरक्षक	21,001/- रु.
4.	सदस्य	11,001/- रु.
5.	नव निर्माण सदस्यता	25,001/- रु.
6.	पूजा फण्ड	1,001/- रु.
7.	ज्योति फण्ड	501/- रु.

विनायक यंत्र पूजा

स्थापना

पञ्च परम परमेष्ठी पावन, मंगल कहे गए हैं चार।
चार लोक में उत्तम गाए, शरण चार हैं अपरम्पार।।
विघ्न विनाशन हेतु सबका, करते हैं हम आह्वानन।
आओ तिष्ठो हृदय हमारे, कृपा करो तुम हे ! भगवन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूत पञ्च परमेष्ठी अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो, भव भव वषट् सन्निधिकरण।

गंगा जल को प्रासुक करके, धारा तीन कराएँ।
जन्म–जरा–मृत्यु विनाशकर, मोक्ष महल को जाए।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन घिसकर, केसर साथ मिलाएँ।
भव सन्ताप नाश हो मेरा, विशद भावना भाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत धोकर उसके, अनुपम पुञ्ज बनाएँ।
अक्षत पद पाए हम दाता, जग में न भटकाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प निराले, लेकर थाल भराएँ।
काम रोग नश जाए हमारा, आत्म विशुद्धि पाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू बावर फेनी आदि, मीठे सरस बनाएँ।
क्षुधा वेदनी नाश हेतु शुभ, भर-भर थाल चढाएँ।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

घृत की ज्योति जला दीपक में, मोह महातम नाशें ।
भेद ज्ञान के द्वारा अनुपम, आतम ज्ञान प्रकाशें।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, दु:ख सहे अतिभारी।
धूप जलायें कर्मनाश को, आई हमारी वारी।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो अष्टकम दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव नारंगी पिस्ता, के यह थाल भराए।
मोक्ष महाफल पाने को यह, चरणों आज चढ़ाए।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए।
पद अनर्घ पाने को हम भी, आज शरण में आए।।
अष्टम वसुधा पाने को, हम जिनवर के गुण गाएँ।
आतम शुद्धि करके हम भी, शिव पदवी को पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठियो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने कर्म घातिया नाशे, केवलज्ञान प्रकाश किया।
दोष अठारह से विरहित हो, निज स्वभाव में वास किया।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
अर्हन्तों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं..... अरहन्तों....

अष्ट कर्म का नाश किए फिर, अष्ट गुण प्रगटाए।
ज्ञान शरीरी हुए महाप्रभु, अष्टम वसुधा को पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जिन सिद्धों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं ..... जिनसिद्धों.... ।।2।।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, मुक्ती पथ के हैं आधार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जैनाचार्यों के चरणों में, सादर शीश झुकाते है।।

ॐ ह्रीं ..... जैनाचार्य..... ।।3।।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, पाठी मुनिवर रहे महान्।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय हैं जगत प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर उनके चरण चढ़ाते हैं।
उपाध्यायों के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं..... उपाध्याय..... ।।4।।

विषयों की आशा के त्यागी, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, ज्ञान ध्यान तप रहने लीन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
सर्व साधुओं के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं..... ... . ।।5।।

(तर्जः नशे घातिया.....)

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अर्हत् पदवी पाए।
केवलज्ञान जगाने वाले, मंगल प्रथम कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं..... ।।6।।

त्रिविध कर्म से रहित हुए हैं, आठों कर्म नशाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, मंगल सिद्ध कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं..... ।। 7।।

समता भाव धारने वाले, रत्नत्रय के धारी।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, साधु मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं..... ।।8।।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, जानो जग हितकारी।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।

ॐ ह्रीं..... ।।9।।

(तर्ज : नन्दीश्वर श्री जिन धाम.....)

हे लोकोत्तम ! अरहन्त, जग-जन हितकारी।
हो जाए भव का अन्त, भव भव दुख हारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं..... ।।10।।

तुम सिद्ध शिला के ईश, शिव सुख के कर्ता।
हे लोकोत्तम ! जगदीश, कर्मों के हर्त्ता।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं.... ।।11।।

आचार्यादि निर्ग्रंथ रत्नत्रय धारी।
यह लोकोत्तम है संत, अतिशय अविकारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं....।।12।।

केवलज्ञानी उपदिष्ट, जैन धरम जानो।
है लोकोत्तम जग इष्ट, हितकारी मानो।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।

ॐ ह्रीं....।।13।।

नरेन्द्र छन्द

शरण श्रेष्ठ है अर्हन्तों की, सारे जग में पावन।
सुख शांति आनन्द प्राप्त हो, जीवन हो मन भावन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।

ॐ ह्रीं .....।।14।।

सिद्ध शरण है मंगलकारी, हम भी शरणा पाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव में न भटकाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।

ॐ ह्रीं .....।।15।।

जैनाचार्य उपाध्याय साधु, होते पञ्चाचारी।
शरण प्राप्त हो हमको उनकी, पाने पद अविकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।

ॐ ह्रीं .....।।16।।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, उत्तम शरण कहाये।
पाया नहीं है अब तक हमने, अत: जगत भटकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को पद में सादर शीश झुकाए।।

ॐ ह्रीं .....।।17।।

परमेष्ठी मंगल हैं उत्तम, चार शरण सुखकारी।
भवि जीवों के लिए अनादि होते मंगलकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाए।
शाश्वत पद पाने को, पद में सादर शीश झुकाए।।

ॐ ह्रीं .....।।18।।